निरुपमा

नीलेश प्रकाशन
कृष्ण नगर दिल्ली 110051

निरुपमा

महेशचन्द्र सक्सेना

मूल्य 20 रुपये
प्रथम संस्करण 1988
कहानी संग्रह निरुपमा
लेखक महेशचन्द्र सक्सेना
प्रकाशक नीरज प्रकाशन
ए 7/46 कृष्ण नगर दिल्ली 110051
मुद्रक पारस प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032
NIRUPAMA Mahesh Chandra Sexena
(Story Collection)

परिचय

कहानी लिखना कठिन काम है और उससे भी कठिन प्रतीत होता है अपनी ही कहानियो के विषय मे परिचय कराना ।

हमारे देश को आजाद हुए तीस वष हो गए । हमारे देश और समाज ने काफी प्रगति की है, लेकिन हम मानसिक रूप से अभी तक स्वतन नही हो पाए। हमारी सोच के दायरे सकुचित है । आज भी हम लोग सोचते हैं कि वश चलाने के लिए पुत्र का पैदा होना जरूरी है । भले ही वह कुपुत्र क्यो न हो ।

पुरुष समाज का कणधार है, यह तो ठीक है लेकिन सहधर्मिणी, सहयोगिनी के बिना वह अधूरा है । नारी और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं । दोना मिलकर एक नए परिवार की रचना करते है । दाम्पत्य सूत्र मे बध जान पर मुक्त वातावरण मे विचरने वाले दो युगल सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक दायित्वों के प्रतीक बन जाते हैं ।

सहधर्मिणी अपने निश्चय पर दढ हो जाए तो असम्भव को भी सम्भव बना सकती है वह चाहे तो अपने जीवन साथी को प्रेरणा और साहस से उन्नति के शिखर पर पहुचा देती है ।

आर्थिक विषमता और रुढिवादि सकीणता को दूर करना ही मेरी कहानियो का आधार है । इन कहानियो को मैं कहानिया नही यथाथ कहूगा, ऐसा सत्य जिसे आज भी समाज का अधिकाश वग भोग रहा है ।

मेरी कहानिया के पात्रो ने बिना किसी लाग लपेट के सघष को जिया है । इसी अन्तर पीडा ने मेरी कहानियो मे अभिव्यक्ति पायी है ।

आभारी हू अपने परम मित्र डॉ० ओम प्रकाश सारस्वत का, जिन्होंने मुझे हार्दिक सहयोग देकर मेरे और नीलेश प्रकाशन के सचालको के मध्य पुल का काम किया ।

शिमला (हिमाचल प्रदेश) —महेशचन्द्र सक्सेना

क्रम

अंधकार में डूबा सूरज	9
तुलबहादुर	15
सूर्यकिरण	21
नूरी	26
रेत की दीवार	30
सध्या	35
दायरे	41
झुलसते गुलाब	46
नायक	51
शान्ति	55
निरूपमा	60

अधकार मे डूबा सूरज

मेरे द्वार पर किसी न दस्तक दी और मैं घर के कामा मे उलझी जब द्वार पर गई ता देखा कि एक गाल मटोल सावला चेहरा सामने था। एक पल मैं कुछ झिझकी कि शायद कोई नया मेहमान हो किन्तु जरा गौर से देखा तो मजी-सवरी मोटा-सा जूडा बाधे एक बगालिन लडकी कधे पर बडा-सा पस लटकाये कुछ आदेशात्मक स्वर मे कह रही थी—मुझे कुछ रुपये दीजिये, 'बीबी जी !' आपका भला होगा मै बाढ स पीडित हू। मेरे साथ कई और परिवार भी हैं। मैं उसकी निर्भीकता देखकर ताड गई कि यह कोई पेशेवर मागने वाली लडकी है। 'जान न पहचान खाला जी सलाम' वाली कहावत—आखिर तुम कौन हो, कोई काम क्यो नही करती ? मेरा नपा तुला सवाल था।

वह बोली बस पसे मागना ही तो मेरा काम है। दना है तो दो वरना मैं चलती हू।

मैं उसके बेबाक तक पर हतबुद्ध-सी थी। सोचा उसे डाटकर भगा द, फिर असमजस मे पड गई, साचा शायद सच म जरूरतमद हो, यह सोचकर मैंने कुछ पैसे तो दे दिय, किन्तु मुडकर सोफे पर बैठकर कल्पना म खो गई। पूरे देश का मानचित्र मरे मस्तिष्क मे साकार हो उठा। लगा जैसे सारा देश गरीबी की लपेट म हाथ फैलाये खडा हो। मुझे लगा जैसे सभी सभ्य कहे जाने वाले बडे महानगर कलकत्ता बम्बई, दिल्ली, लखनऊ हरिद्वार, मद्रास इत्यादि अपनी विभिन्न वेश भूषा एव बोलियो मे भीख माग रहे हो। एक प्रश्न चिह्न मेरे सम्मुख आ खडा हुआ।

आखिर ऐसा क्यो है ? कोई अल्लाह का सहारा लिय कासा (कटोरा)

फैलाये है तो यही भाई राम और कृष्ण के नाम पर झोली पसार है। कहीं ढोंगी हैं तो कहीं लाचार समय के मारे अपाहिज लहू-लुहान चीथड़ों में लिपटे अधनग्न भिखारी हैं। मेरा मन इस भयावह दृश्य से क्लान्त हो उठा। सामने दीवार पर लगे कलेण्डर पर कलकत्ता के ग्रांड होटल के अंकित दृश्य पर निगाह अटक कर रह गई। ऐसा आभास हुआ कि इस आलीशान भवन की आड़ में कितनी निर्धनता के दृश्य चीत्कार कर रहे हों जिन्हें सुनने वाले कान ऐशो आराम में बहरे हो चुके हैं।

उसी समय मेरी पड़ोसिन ने आकर कहा 'बहन तुम्हारी यह चिट्ठी पोस्टमैन मेरे यहां डाल गया लगता है। आकाशवाणी शिमला से आई है।' मैंने बन्द लिफाफा लेते हुए उन्हें धन्यवाद दिया। खोलकर देखा तो एक कहानी के प्रसारण का निमन्त्रण था। कहानी इतनी जल्दी कहां से लिखूं मैं अब दूसरी उलझन में पड़ गई किन्तु शनैः शनैः कलकत्ते के बाबू बाजार का दृश्य मेरे सामने एक चलचित्र के समान उभरने लगा—जिसे मैंने आज से लगभग 20 वर्ष पूर्व देखा था किन्तु तब वह मेरे लिये केवल एक दृश्य मात्र था और आज आज मुझे भली प्रकार स्मरण है कि एक रात्रि के दृश्य ने कहानी को लौट दिया। वर्षों की दबी कचोट उभर आई। तब मैं कलकत्ते के बाबू बाजार स्थित एक भव्य भवन में अपने रिश्ते की बहन के यहां ठहरी थी। सारे घर वाले नींद में खर्राटे ले रहे थे और वहां की सीलन भरी गर्मी में मेरी नींद जाग रही थी। लगभग रात्रि का एक बजा होगा कि बाजार के एक कोने से शोर मचा। मैं चौंककर बिस्तर पर उठकर बैठ गई। नीचे सड़क पर झांककर देखा—पुलिस की वर्दी पहने कुछ सिपाही सड़क के किनारे फुटपाथ पर सोये स्त्री, बच्चा व आदमियों को कोड़ों से पीट-पीट कर घसीट रहे थे और वे पशु के समान बेबस गुलाम से चीख रहे थे। मैंने तुरन्त अपनी बहन को जगाकर पूछा यह सब क्या हो रहा है।

बहन बोली अरी पगली सो जा। यह कलकत्ता है यहां यह मारधाड़ रोज होती है। पुलिस वाले फुटपाथ पर सोये भिखारियों से पैसे वसूल करते हैं और पगड़ी न देने पर उन्हें मारते हैं।

मैं चुपकर होने का प्रयास करने लगी कि कुछ देर बाद फिर वही गाली गलौज व शोर सुनाई देने लगा। किसी तरह अपने को शोर का आदी

बनाकर मैंने कुछ दिन वहा काटे । जिस दिन वापस लौटना था उस रात्रि का देखा गरीबी का नग्न चित्र आज जब बगाली लडकी पसे माग रही थी आखो के सामने उभर आया । बडे-बडे होटलो और घरो की ऊची खिडकियो से मछली की खालें और जूठे चावल जब मालिक लोग नीचे फेंकते और उसी समय रेंगते कीडो स गरीब, अधनग्न बच्चे कूडे से जूठन उठा-उठाकर खाना शुरू कर देते । उस जूठन के लिए भी वे परस्पर लडते थ ।

मैंने मन सयत कर सामन कमरे की टेबुल पर पडे समाचार पत्र पर नजर डाली कि कुछ विचारो का मानसिक तनाव कम करू तो फिर इस प्रकार की खबर सचित्र सामन आकर अटक गई । मोट-मोट अक्षरो म लिखा था—'बगाल की लडकिया पजाब मे बेची जा रही है, मैं फिर अशान्त हो उठी कि इतन म मेरे पति के मित्र रवि ने कमरे मे प्रवेश करते हुए आवाज दी—"अरे भाभीजी क्या सोच रही हैं लगता है आज कोई कहानी का पाठ सोचा जा रहा है या किसी पार्टी का प्रोग्राम बन रहा है ।"

मैंने कहा—नही, रवि भाई ऐसा तो कुछ नही है बस यू ही घर का काम निपटाकर बैठ गई थी ।

नही भाभीजी, यह बात तो मैं मानन वाला नही, आपके चेहरे पर स्पष्ट किसी प्लान की छाप दिखाई पड रही है ।

अच्छा तो यही समझ लो ।

रवि भाई बोले समझ कम लू कुछ बताओ तो समझू ।

मैंन कहा तुम्हे सिवाय चाय काफी क और कुछ समझ म नही आयेगा, हा प्लान की बात मन मे अवश्य है ।

देखो है न सच ! पार्टी या कहानी का प्लान न सही तो मकान का प्लान होगा ।

शिमला म मकानो की बडी तगी है । मकान का प्लाट खरीदना हो तो एक सेट मेरे लिये भी एडवास मे बुक कर लेना ।

मैंने कहा मैं काफी बनाती हू तुम पहले कॉफी पियो म फिर बताऊगी कि मैं क्या सोच रही हू ।

यह हुई न मतलब की बात । गम गम काफी के साथ आपके प्लान के बारे म विचार विमर्श करग ।

मैं उठकर कॉफी बना लाई। इतनी देर म रवि मनगढ़ त हवाई किले बनाता रहा।

जब कॉफी का घूट पिया तो रवि भाई बाल—' भाभीजी अब और सब्र नही होता। पहेलिया मत बुझाइए। बताओ न, क्या सोच रही थी आप !

रवि मैं सोच रही थी कि आज का आधुनिक युग कितना सुसस्कृत एव सभ्य हो चुका है। मानव इस पृथ्वी से दूर चाद तारा पर जा पहुचा है, किंतु फिर भी अभी उसे पृथ्वी पर चलना नही आया।

रवि कब चुप बैठने वाला था—बोला मै समझा नही, आपका तात्पय क्या है ?

तात्पर्य स्पष्ट है—आज हमारे देश मे ही नही वरन् सम्पूण ससार म कितनी गरीबी और अध विश्वास है आदमी-आदमी का शत्रु है। अपनी रोटी के लिये वह क्या कुछ करने मे नही हिचकिचाता—चोरी डाका हत्या, आत्महत्या, बलात्कार छल फरेब सभी कुछ ता ज्यो का त्या है। न जान यह खून की प्यास कब बुझेगी ?

जान दो भाभी ! आप ता सुकरात की तरह दाशनिक बन बठी। अब आप ही बताइए कि इतन बडे विशाल समुद्र की तरगा मे आप जसी नारी के विचार तिनके के समान ह। केवल एक बूद ओस की तरह टिमटिमाती आशा मात्र। ऐस विचार लेकर तो आज आदमी पेट भी नहीं भर सकता। हम इन आदश विचारो से लिपटे कब तक जी सकेंगे।

मुझे रवि की बाते बिजली के करण्ट जसी लगी। मन मस्तिष्क को एक झटका-सा लगा। मुझे यह सब अच्छा नही लगा और मैं बोल ही पडी—तुम जस लोग ही तो नग्न यथाथ की दुहाई देकर समाज के कणधार बन कर समाज को डुबान पर तुले हुए हैं।

रवि ने फिर एक कहावत मेरे सामने निलज्जिता से दोहरा दी—'काजीजी क्यो दुबले शहर क अदेशे म । आपके साचने से मनुष्य बदल नही जाएगा और न ही समाज म भूख गरीबी दूर हो जाएगी। समाज और ससार का यह पचडा आपका रगा का लहू भी पी जाएगा और आप सूखकर काटा हो जाएगी शेष रहेगी आपक मन म एक चुभन एक टीस।

मुझे देखिए ! मेरी तो फिलॉस्फी है—' Eat drinke bemarey— खाओ पिओ और मस्त रहो।" तभी तो मैं मोटा ताजा हू । न समाज की फिक्र, न ससार का गम। जिसने जैसा किया वैसा भोग रहा है । इसम दुख की क्या बात है । राह म भिखारी हैं या रोगी मुझे क्या लेना-देना इनसे ।

रवि के यह तुच्छ विचार बडे शक्तिशाली थे । उसने अपन तर्क के लिये कमवाद की ओट ली थी, किन्तु मेरी भावनायें भी किसी ठोस आधार पर थी केवल किताबी नही। अत मैंने कहा—रवि तुम कितने सकीर्ण मस्तिष्क वाले मनुष्य हो । अपने अलावा किसी की परवाह न करने वाला तो केवल पशु के समान है। कुत्ते और गिद्ध भी तो मास के लोथडे के लिय लडकर केवल अपना पेट भरना जानत है। साप की तरह तुम भी अपनी ही नस्ल को खा जाना चाहते हो।

रवि मेरे तर्क स तिलमिला उठा। क्रोधित होकर वह उठ खडा हुआ और बोला—भाभीजी एक प्याला काफी पिलाकर आज तो आपने मुझे जानवरो की कतार म खडा कर दिया आखिर आप ही बताइए इस ला-इलाज बीमारी का निदान क्या है ?

निदान तो आसान है मैंने अपने तर्क से परास्त रवि को बिठात हुए कहा, 'पहाडो मे तुमने एक वनस्पति देखी होगी—बिच्छू बूटी और पालक के समान बूटी। दोनो पास पास ही उगी होती है। काटदार बूटी की जलन का इलाज पालक जस पत्ते का शीतल रस है इसी तरह गरीबी का निदान भी जनसख्या की महामारी को रोककर कर्मशीलता और खाद्य पदार्थों एव उपयोग की वस्तुओ का उत्पादन बढाकर हो सकता है। यदि समाज मे व्याप्त इस जलन को मिटाना है तो अवश्य उन्हे शिक्षित करने का दायित्व हम सभी को लेना होगा। केवल सरकार को एक माली के समान पूरी वाटिका का भार सौप देना काफी नही है आखिर माली की भी तो एक सीमा है। मेरी बात सुनकर रवि भाई सोच म डूब गए। इसी समय उनका बेटा अकुश पापा-पापा कहता आ पहुचा और बोला, चलो कोई आपस मिलने आया है। रवि चला गया। किन्तु अपने मन पर उभरी मेरे तर्क की किरणें कमरे से बाहर लेता गया। मुझे विश्वास है कि वह एक दिन अवश्य समाज को ऊष्णता प्रदान करेगा।

मैं तबसे लेकर आज तक सोचती हू आखिर सच क्या है ?

हमारे नेताओ न तो हमे भाषण और वायदे ही दिए हैं। वे भी सच्चे हृदय से देश के लिए गरीबी, भूख, बेरोजगारी के विषय मे सोचें, कुछ करें, तभी इस समस्या को हम दूर कर सकेंगे।

हम सब लाग एक समाज मे रहते हैं। देश हमारा है। हम सभी को देश हित के लिए इम समस्या का हल ढूढना होगा।

हम सब एक साथ मिलकर ही समाज के इन गरीब, निरस्क्षत कहे जाने वाले लोगो को कम-पथ पर ले जाकर उनका भविष्य उज्जवल बना सकते हैं।

तुलबहादुर

'तुलबहादुर एक नेपाली लड़के का नाम है। नहीं नहीं, उनका नाम तो अतुलकुमार है। वह देखो उसके रहने के कमरे की खिड़कियों के शीशे पर लिखा है— अतुल कुमार।' किन्तु फिर वह तुलबहादुर कौन है? इस एक प्रश्नचिह्न ने माधवी के मन को चारों ओर से घेर लिया। अतुल के मित्र शरत ने माधवी को उसके हाथ से बने वे चित्र दिखाये जो खिड़कियों के शीशे पर अंकित थे। इनमें कुछ पहाड़ी प्राकृतिक दृश्य थे तथा कुछ बेल बूटे, और अमूर्त रंग बिरंगी आकृतियां। माधवी इन रंगीन चित्रों को देखकर आश्चर्यचकित रह गई। उसने ऐसे ही अमूर्त चित्र कुछ वर्षों पूर्व अमेरिका में देखे थे। आज वह अपने देश में ही इन्हें देख रही है। वह शरत से बोली, 'शरत इन चित्रों का कलाकार कहां है?' मैं उससे मिलकर कला को समझना चाहती हूं। शरत मुस्कराता हुआ बोला आंटी जी धीरज रखिये, आइये इधर देखिये यह उसी की सिलाई वाली मशीन है। वह स्वयं अपने सूट व अन्य वस्त्र सिल लेता था। और वह देखो अलमारी में रखी विज्ञान की पुस्तकें तथा दीवार के सहारे लटकते संगीत के वाद्य जिन पर वह बड़ी तल्लीनता से रियाज किया करता था।

माधवी बोली, मगर वह है कहां?

शरत बोला 'आंटी जी, अब वह हम लोगों से दूर बहुत दूर चला गया है अपने देश नेपाल में सच तो यह है आंटी जी कि वह मेरा एक सच्चा मित्र था। कहते कहते शरत की आंखें गीली हो गईं। माधवी असमंजस में थी। उसे सांत्वना दे रही थी और कह रही थी कि इसमें रोने की क्या बात है। तुम्हें उसका पता तो मालूम ही होगा। उसे पत्र लिखकर बुला लो

माधवी को क्या मालूम कि शरत उसके ठौर ठिकाने से अनभिज्ञ था। शरत ने एक पल शून्य की ओर निहारा और अपनी आखो से अश्रु पोंछते हुए बोला, मैं केवल यही जानता हू आटी जी कि वह मेरे परिवार का एक घनिष्ठ सदस्य बन गया था। वह मेरा बहुत ख्याल रखता था। मा बाप के समान मेरी देख भाल करता था और एक मित्र के समान मेरा मनोरजन करता था। इस बडे घर म वह आज से तीन वर्ष पूर्व एक नेपाली छोकरे के रूप म आया था। नेपालीकट चूडीदार पाजामा और कमीज पर काली जकट पहन, सिर पर तिरछी नेपाली टोपी लगाये कमर म खुखरी लटकाये, जब मैंने उसे पहले पहल अपने पढने वाले कमरे मे उसे देखा तो मैं उस पर झल्ला उठा था— अबे ! तू कौन है छोकरे ? बिना पूछे यहा कसे आ गया।' इस पर वह मुस्करा दिया। उसको मुस्कराते देखकर मेरा सारा क्रोध पिघल गया। मैंने बनावटी स्वर मे फिर कहा—बडा बदतमीज हैंतू यू मुस्करा रहा है। यह सुनकर वह रोने लगा। मैं उसका यह विरोधी रूप देखकर असमजस म पड गया। मैं सोच रहा था यह अजीब छोकरा है। अपनी कुर्सी स उठकर मैंने बडे प्यार से उससे पूछा—भाई इसमे रोने की क्या बात है।

वह बोला कुछ नही शाब ! मगर हमारा गलती क्या है ? मैंने आज तक किसी का कुछ बुरा नही किया शाब

मैंने कहा अरे ! बुद्धू, कौन कम्बख्त कहता है कि तूने बुरा किया है। बात यह है कि मैं पढने म व्यस्त था। कल मेरी परीक्षा है। बता तुझे इस कमरे म किसने भेजा ?

वह बोला—मा ने।

तुम्हारा नाम क्या है ?

तुलबहादुर शाब,।

अच्छा तो किसलिये मा ने तुझे यहा भेजा है।

खाना खाने को आप का बाला है शाब।

अच्छा मैं आता हू, तू मा के पास चल।

मैं तुरन्त उठकर मा के कमरे म चला गया। मा मुस्करा रही थी। बाली आखिर यह छोकरा तुझे उठा ही लाया। चलो यह नया नौकर तुझे

ठीक कर लेगा। मैं तो रोज रात म तेरा इन्तजार करत-करत सो जाती थी। तुझे रोज ठडा खाना खाना पड़ता था। जिद्दी स्वभाव के शरत को इस उलाहने पर हल्की सी ठेस लगी। वह आश्चय स बोला—मा यह छोकरा है कौन ?"

'शरत यह छोकरा आज से इस घर का सब कुछ है। इस कभी नौकर मत समझना। राजा साहब ने इसे तुम्हार पापा के कहने पर नपाल स बुलवाया है। बडा समझदार तथा ईमानदार लडका है लगता है किसी अच्छे परिवार का है।'

इस प्रशसा पर शरत चिढ गया। बोला, 'अच्छा तो मैं बुरा हू, और यह चूहे-सा छोकरा अच्छा लडका है।

'शरत तू चिढ क्यो गया। जो तरी तरह हो, क्या वही अच्छा होता है। तू अब बडा हो गया है अच्छे-बुरे का पहचान करना सीख।'

अच्छा जाने दो मा, बात का बतगड मत बनाओ। खाना लगाओ, मुझे अभी पढना है। उसी समय तुलबहादुर कमरे मे आकर बोला—'शाब खाना मेज पर लगा दिया है। चलिए गम पानी स हाथ मुह धो लीजिय।'

ओह ! तू इतनी जल्दी खाना भी परोस आया। लगता है तू सच मे बडा समझदार है। यह कहता हुआ शरत खाना खाने चला गया। आज उसन बहुत दिनो बाद गम, और स्वादपूण खाना खाया था, क्योकि उसकी म सवा आश्रम की मनेजर थी और पिता एक फम के मालिक। दोनो अपने अपन व्यवसाय म इतने व्यस्त रहते कि शरत अपन भीतर एक अकलेपन का आभास करता। मोटी-मोटी नीरस पुस्तके तथा खोई खोई सूनी कल्पना ही उसके एकाकी जीवन के साथी थे। जिसके फलस्वरूप वह अनजान ही चिडचिडा हो चला था।

शरत की एक ही अभिलाषा थी कि वह सारा दिन रग बिरगे फूलों के साथ गुजारे। अपने खालीपन को दूर करन के लिए वह स्वय माली बनना पसन्द करता था। बचपन मे मेरे घर के सूने वातावरण स ऊबकर पडोस के लॉन मे तितलियो के पीछे दीवाना-सा भागा फिरता। दिवास्वप्न मे खोया वह सोचता रहता कि मैं बडा होकर इस लान के माली के

एक अच्छा माली बनूगा। अपने पिता के समान फम का मालिक या मा के समान किसी आश्रम का मैनजर नही बनूगा। देखो माली दिन भर अपने घर के पास ही रहता है। कितना आनन्द है। फूलो और तितलिया के बीच।

उसके अन्तर मन म जन्मा बचपन का स्वप्न यथाथ से टकरा कर चूर चूर हो गया। बडा होकर जब उसने स्वय माली बनने का प्रस्ताव अपने परिवार के सामने रखा तो उसे लगा कि जैसे उसकी कल्पित रगीन कोमल तितलियो के पग किसी ने नोच डाले हो उसकी भावी आशाओ के लान मे लहलहाते रग बिरगे फूलो को किसी बडे भारी भरकम आदर्शा-त्मक पैर ने कुचल डाला हो, उसके पिता उससे कह रहे थे शरत क्या तेरा सिर फिर गया है तू खानदान की इज्जत एक माली बनकर तबाह करेगा। यही बनाना था—तो—जा—किताबो को आग लगा दे। पढने-लिखने से क्या फायदा? नालायक कही का' शरत शिकजे म जकडे शिकार के समान खामोश खडा था। इज्जत दौलत तथा परिवार की रूढियो न उसके चारो ओर मर्यादा की सलाखें खडी कर दी। उसका मन कह रहा था कि वह इन सलाखो को तोड द, कि तु पास म खडी मा कह रही थी—बेटा, 'जरा सोच तो कि तेरा भला किसम है।'

शरत उम्र की दहलीज पर खडा एक असहाय खामोश युवक था। जिसके सामने समझौता ही शायद जीवन का दूसरा नाम था। उसने अपने पिता की इच्छानुसार इजीनियर बनना स्वीकार कर लिया किन्तु वह सोच रहा था कि आखिर इजीनियर बनकर वह क्या करेगा। सारा जीवन उसे इट पत्थरो म जूझना पडेगा। अचानक उसे याद हो आया कि जैसे उसके पढने के कमरे म उसका मित्र नेपाली छोकरा तुलबहादुर अपने घर म दूर खडा रो रहा हो उसकी मुस्कराहट म कितना भोलापन, कितना इसानी प्यार झलक रहा था। यहा उसका अपना कोई घर नही कोइ मा-बाप नहीं। फिर भी कितनी मासूमियत म वह बचारा बगहारा, बेघर केवल पेट के लिए नगान म यहा नौकरी करने अकेले हा चला आया। उसकी नजरो के सामने अपने कालेज के प्रिय प्राध्यापक द्वारा लिखित पुस्तक का शीषक घूम गया— मोटे-मोटे अक्षरो म अकित था 'Bread Shelter

और तभी उसने सकरप किया वह भी कुछ रचनात्मक काय करेगा, उसे अपने भीतर एक अलौकिक शक्ति का आभास हुआ। उसने निश्चय किया कि वह स्वय एक अच्छा वास्तुकार बनगा। वह ऐसे भवन निर्माण करवायेगा जिसमे मानवता का पुट हो, केवल ईंट-पत्थरो से निर्मित ऊची काल-कोठरिया न हो। वह बेघर लोगो को ऐसा घर देगा जिसमे मानव सवेदनाए तथा आकाक्षाऐं साकार हो। इट-पत्थर भी बोलते प्रतीत हो कोई अकेला रहकर भी एकाकी अनुभव न करे बस इस विचार से ही उसमे एक नवीन चेतना आ गई। प्राय तुलबहादुर भी कहता शाब-खाना और घर दोनो ठीक होना चाहिए, तभी मनुष्य आदमी को आदमी समझता है और भगवान् की पूजा कर सकता है।

वह एक अबोध बालक की तरह दौडकर अपनी मा स लिपट गया। मा चकित थी कि उसे हुआ क्या है ? इतने मे तुलबहादुर न कमरे मे प्रवेश करत हुए कहा —मा जी खाना ठण्डा हो रहा है चलिय खा लीजिय। शरत, तुलबहादुर की इस काय कुशलता पर मुग्ध था। इतना फुर्तीला तथा समझदार छोकरा इससे पहले उसन घर म कभी नही देखा। न जाने कितन नौकर आये और चले गय। कोई कामचोर था, तो कोई खाने पीन की वस्तुऐं चुराता था किसी को डाट फटकार वताकर निकाला गया, तो कोइ स्वय बिन बताये घर से भाग गया। शरत मन ही मन सोच रहा था कि यदि यह छोकरा समय की कसौटी पर खरा उतरा तो मैं इस अपना मित्र बना लूगा। वह शरत को प्राय एक वास्तुकार बनने की प्रेरणा दता था।

यही सोचत सोचत शरत आराम कुर्सी पर ऊघने लगा। जब मा खाना खाकर वापस कमरे मे आइ तो शरत को दखकर दग रह गई। वह सदा खाना खाकर अपने कमरे म सीधा चला जाता था, कहन पर भी कभी मा के कमरे मे नही रुकता।

मा न दुलार स शरत के सिर पर हाथ रखते हुए कहा—बेटा जाओ, अपन कमरे मे सा जाओ, तू क्या सोचते साचते सो गया ?'

कुछ नही मा ! बस यही सोच रहा था कि मैं अब माली नही एक वास्तुकार यानी आरकीटक्ट बनूगा। मुझे परिवार का ही नही वरन् दश का भी नाम उजागर करना है।

कुछ वर्षों बाद उसने चण्डीगढ़ में भवन निर्माण कला की शिक्षा ग्रहण कर ली और अपने पेशे में सृजनात्मक विचारों का स्पंदन लगा। जब माधवी विदेश से लौटी तो एक स्वप्न सा मन में सजाए उसे शरत से मिली जो सफलता की कगार पर खड़ा था।

माधवी ने शरत की कहानी एवं तुलबहादुर के बारे में जानकर अपना प्रस्ताव शरत के सामने रख दिया—'वह स्वदेश में गरीबों के लिए एक ऐसा अस्पताल स्थापित करना चाहती थी जिसकी वास्तुकला की रूपरेखा पीड़ित रोगियों को एक मानवीय आनन्द दे सकने में समर्थ हो।'

शरत जैसा अनुभवी भावुक वास्तुकार उसे इस कार्य के लिए शत प्रतिशत उपयुक्त जंचा, क्योंकि उसके कल्पना शील मन का आधार था एक अबोध सरल मानव तुलबहादुर।

सूर्य-किरण

रीता का व्यक्तित्व अब नीरस हो चला था। उसके लम्बे सूखे चहरे पर भूरे रंग का विग लगा था। निस्तेज नेत्रों के नीचे काले रंग के धब्बे उभर आये थे। उसकी शुष्क त्वचा की परतों में भीतर लगता था कि कहीं कोई अथाह दर्द छुपा हो।

आखिर मैंने सकुचाये हुए भाव में पूछ ही लिया—'हलो रीता! आजकल तुम क्या कर रही हो—तुम्हारे पति का क्या हाल है? अब बच्चे तो बड़े हो गये होंगे? कितना अर्सा हो गया तुमसे मिले।' मैं यह सारे प्रश्न एक सांस में ही पूछ बैठा।

वह मेरे प्रश्नों की झड़ी से विचलित हुए बिना एक नीरस सी हंसी हंसकर बोली—'मैं ठीक हूं सविता! दफ्तर के किसी काम से शिमला आई थी। सोचा तो बहुत था कि तुमसे मिलने के लिए पत्र लिखूं किन्तु दफ्तर की उलझनों में भूल गई। तुमसे मिलने को बड़ा जी करता था सो आ गई।'

अच्छा तो तुमने नौकरी कर ली। तुम तो नौकरी के खिलाफ थी। खैर छोड़ो इन बातों को—किन्तु यह तो बताओ कि कौन-सा विभाग सम्भाला है।

मैं पर्यटन विभाग में हूं। एक लड़का सेंट जेवियर्स स्कूल जयपुर में पढ़ता है और मेरा दूसरा बड़ा बेटा एयरफोर्स में पायलट है। तुम सुनाओ तुम्हारा क्या हाल है। क्या तुम अब भी कहानियां लिखा करती हो या कहीं पत्रकारिता की नौकरी कर ली है जो मुझसे मेरा हाल साक्षात्कार के रूप में पूछ रही हो।

मैं उसकी यह बात सुनकर हंस पड़ी, किन्तु दूसरे क्षण ही अपने को संयत करते हुए मैंने कहा—'खूब पहचाना तुमने, मेरी कहानियों की पांच पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं किन्तु मेरा क्षेत्र सीमित है। केवल नारी जीवन पर ही मेरी लेखनी उठती है। यूं पुरुषों पर लिखना है भी कठिन। मेरे पति भी एक कहानीकार हैं।

रीता तपाक से बोली—'वाह खूब मिली जोड़ी। और मैंने व्यंग्यात्मक स्वर में कह डाला यानी तुम्हारा मतलब है रीता—एक अन्धा एक कोढ़ी।

रीता सकपकाकर बोली नहीं मेरा अर्थ यह कदापि नहीं था।

मैंने फिर चौके पर छक्का मारा—मतलब चाहे कुछ भी हो किन्तु निस्सन्देह तुम्हें पुरुषों की अच्छी पहचान है। फिर पर्यटन विभाग में तुम्हारा पद रिसेप्शन का है। आये दिन नये लोगों से वास्ता पड़ता होगा।

नहीं सविता अब मैं स्वागत कक्ष की अपेक्षा उनके खाने पीने का अधिक ख्याल रखती हूं यानी मैं कैटरिंग इन्चार्ज हूं।

अच्छा! यह तो और भी अच्छा है। मैंने व्यंग्य की अपेक्षा प्रशंसा का भाव दर्शाते हुए कहा। इसका उस पर एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा। वह बड़ी आत्मीयता से बोली—अब तुमसे क्या छुपाऊं सविता! मेरा कोई बच्चा नहीं है। वास्तव में मेरे पति ने दूसरा विवाह कर लिया। अतः दूसरी पत्नी से दो बच्चे हैं। यह कहते कहते वह अपने अतीत में खो गई।

वह कानपुर के एक विद्यालय की छात्रा थी। छात्रों का उपहास करती थी। नारी को वह पुरुष से बड़ा मानती थी। उसका दृढ़ विश्वास था कि एक दिन वह अपने को समाज में एक उच्च अधिकारी के रूप में प्रतिष्ठित करेगी। किन्तु ऐसा विधाता को स्वीकार न था। एक ओर उसकी आकांक्षाएं संघर्ष कर रही थीं और दूसरी ओर मृत्यु शय्या पर पड़े उसके पिता उसे विवाह-सूत्र में बंधने को बाध्य कर रहे थे। उसे रूढ़िवादी नारी का परिधान ओढ़ना ही पड़ा। उसका अनचाहा विवाह हो गया।

जिस कक्ष में वे दोनों बात कर रही थीं उसके पास वाले हाल में टी०

बी० पर क्रिकेट मैच देखा जा रहा था। सारा हॉल बच्चों-दर्शकों से भरा था। पड़ोसी व मित्रगण आ-जा रहे थे। एक अद्भुत उल्लास-मिश्रित वातावरण था। बीच बीच मे चाय-कॉफी के दौर चल रहे थे। सविता का घरलू नौकर मेहमानदारी निभा रहा था।

इतने म भारतीय टीम के कप्तान ने रनो का एक शानदार शतक पूरा किया। सब छोटे-बडे प्रसन्नता मे नाच उठे। सबकी जबान पर एक ही नाम था—कपिल देव' 'कपिल देव जिन्दाबाद' के नारे हाल मे गज रहे थे। इन नारो को सुनकर भारत की मातायें कितनी प्रसन्न हुई होगी। मैं सोच रही थी कि पुत्र हो तो एसा जो देश का नाम रोशन करे। इतने म मेरी पडोसन राधिका बोल उठी—पुत्र चाहे एक ही हो किन्तु ऐसा तो हो जो अपने देश का नाम उजागर करे, मा बाप का नाम रोशन करे। तभी तपाक स मैंने कहा—पुत्र ही क्या पुत्रिया भी तो देश का नाम उजागर कर सकती हैं। यह कहते हुए मैंने विश्व की उन सभी महिलाओ के नाम गिनाना आरम्भ कर दिये जिन्होंने अपने अपने क्षेत्र मे कीर्तिमान स्थापित किये है।

राधिका चिढ गई। बोली—हा! है तो ठीक किन्तु लडकियो को अवसर कौन देता है। पुरुष लोग औरतो को तो अपना गुलाम समझते है। जीवन जीना भी दूभर है।

मैंने कहा—गुलामी की बेडिया तोडना भी तो हम नारियो का ही काम है। एक दिन तुम भी अपनी नाक रखने के लिए कह रही थी—कि मेरी बहू दहेज नही लाई। जी चाहता है उसे घर से निकाल दू। बडे बाप की बेटी होगी अपने घर के लिए। मेरी आशाओ पर तो पानी फेर दिया। मैंने अपने राजेश की पढाई पर कितना पैसा खर्च किया। पर मिला क्या? उधर देखो रजनीश की मा का घर, दहेज रखने के लिए तिल भर जगह नही रही। ठसाठस घर भर गया। कह रही थी कोई बडी कोठी किराये पर लूगी।

मैं यह सब सुनकर सोच रही थी कि सच म नारिया भी क्या हैं? इस राधिका के समान न जाने कितने परिवार होंगे जिन्हे कभी जीवन मे सन्तोष नही होता। और जो स्वय अपने को कलकित करते हैं।

दूसरी महिला हैं श्रीमती खन्ना जो कहती हैं कि पुत्र पुत्रियो से श्रेष्ठ

हैं। इसी चाह मे स्वय सात पुत्रियो की मा वन बठी। न लोक लाज का भय, न आर्थिक कठिनाइया का आभास। सदा एक ही वाक्य जुबान पर रहता है कि मेरा कारोबार कौन चलायगा? उधर उसकी नौकरानी सावित्री का कहना है कि गाव मे तो बिना पुत्र के पडोसी जीना दूभर कर देत हैं। और सरकार दूर मे तमाशा देखती है। अकेला चना क्या भाड फाडेगा। जिसकी लाठी उसकी भैंस—बडे परिवार का ही गाव वाले साथ देत हैं।

किन्तु इस रूढिवादी परम्परा को तोडेगा कौन? सरकार बनाने वाले भी तो हम सब हैं। यदि हम नारिया चाह तो परिवारो को अनक बुराइयो से बचा सकती है। आन वाली भावी पीढी की रूपरेखा का दायित्व बहुत कुछ हम नारिया पर भी है। सीमित व सुशिक्षित परिवार क अपन लाभ भी ह।

इस पर श्रीमती खन्ना तिलमिला उठी और बोली—चार अक्षर क्या पढ लिय मर्दों की हिमायत करने लगी। यह फिलॉसफी की बातें किसी और को समझाना, आखिर मेरा भी कुछ तजुर्बा है।

मैंने शान्त स्वर म उनस कहा—पढन का अथ केवल दफ्तर की नौकरी या क्लब मे ताश के पत्ते ही खेलना नही है। अपन घर के काम करने मे हम लज्जा का अनुभव या ग्लानि नही होनी चाहिए। आप अपनी पुत्रियो पर घर का सारा भार डालकर अधिकतर घर स बाहर ही रहती हैं। क्या यह उचित है? इस तक पर वे उठकर चल दी। उन्ह लगा सब उन्ही पर प्रहार कर रहे हो। मैंने चुटकी लेते हुए कहा—अरे! क्रिकेट जीतने की खुशी म एक कप चाय तो पीती जाइये।

अब कहा रुकने वाली थी। बोली, चाय नही पीनी, पट म जलन है घर घर जाकर डायजीन लूगी और अनायास जाते-जात वह रुक गई।

मैं सोच रही थी—सच वास्तव म कितना कडवा होता है। उसे गले उतारना सबक बस की बात नही। इतन मे राकेश आ गया। बोला—आन्टी जी क्या बहस चल रही है? चाय तो आज पिलवानी ही पडेगी। क्योंकि भारत की टीम न मच जीत लिया है। मैंने मुस्कराकर श्रीमती खन्ना वाला चाय का प्याला राकेश की ओर बढा दिया। वह चाय की

चुस्की लेता हुआ कह रहा था—बेटा हो तो कपिल देव जैसा। यदि उसे अपनी मा का सहारा न मिलता तो वह इतना बडा खिलाडी न बन पाता। किन्तु आजकल माता पिता बालको की रुचि जाने बिना ही उन्हे डॉक्टर या इन्जीनियर बनाने मे ही अपना गौरव मानते हैं। लडके लडकी मे भेद-भाव करते हैं वह अलबत्ता।

शाबास राकेश शाबास! तुमने मेरे मन की बात कह दी। इन बहनो का समझाना कठिन है। मेरा भी कहना यही है। एक सूर्य लाखो सितारो से उत्तम है। चाहे लडकी हो या लडका! गुण चमकता है यही लोग समाज और देश का इतिहास गढते हैं।

श्रीमती खन्ना राकेश का तर्क सुनकर कुछ सोचने पर विवश हो गईं। और अब उन्हे मेरी बात मे भी सार नजर आने लगा। उनका तिलमिलाया चेहरा किसी आन्तरिक बदलते भाव से चमक उठा। मुझे लग रहा था जैसे उनके व्यक्तित्व का कायाकल्प हो रहा हो। उनमे नये विचारो को समझने की शक्ति आ गई हो।

मैंने तुरन्त उनसे पूछ लिया—आप ही बताए कि मेरा कथन कहा तक ठीक है?

श्रीमती खन्ना लज्जा का अनुभव करते हुए कुछ बोल न सकी, उन्होने केवल सकारात्मक सिर हिला दिया और कमरे से बाहर चली गईं।

नूरी

हरिद्वार जाने वाली गाडी कुम्भ के मेले के कारण यात्रियो से खचाखच भरी हुई थी। मैं दूसरे दर्जे के डिब्बे मे अकेला बैठा ऊघ रहा था। सिर के ऊपर सामान रखने वाली सीट पर लदे यात्रियो के अनेका पर लटक रहे थे। भीड़ मे उठती पसीने की एक अजीब बदबू से मेरा सिर फटा जा रहा था। मैंने एक बार सोचा कि गाडी से उतर जाऊ—वसे ही किसी की अजनबी आवाज कानो मे पडी—

हा, भाई तो सुनिये मेरा नाम है नूर मोहम्मद! मगर मेरी बीवी मुझे प्यार से नूरी कहती है। यह मेरा चारखाने की कमीजनुमा कुरता और यह अलीगढ़कट पाजामा उसी के हाथ का सिला है। मेरे गले मे लटकता यह काला तावीज मेरे उस्ताद की यादगार है। यू मैं कोई मौलवी या मदारी नही हू। पेशे के लिहाज से मैं एक चलता फिरता जनरल स्टोर हू। मसूरी अलमोडा और ननीताल मे मैं मौसम के मुताबिक हर काम कर लेता हू।

मैं उस अजनबी नौजवान को बीच मे टोकते हुए पूछ बैठा—क्या मतलब है मिया? तुम हर काम कर लेते हो।

जी हा! वह बोला—अजी इसमे ताज्जुब की क्या बात है। मसूरी मे फलो की दुकान है। नैनीताल मे पुराने अखबारो की रद्दी की आढत है। पुराना माल खरीदकर कबाडिये का काम भी कर लेता हू। जब इन सब कामो का मौसम नही होता तो मैं मदारी का काम करता हू। यह वाक्य कहते ही उसने अपने बातो का लहजा बदल लिया। बोला—जनाब हमारा पेशा है Magic—यानी जादू दिखाने का—काला जादू करने वाला—कमाल

चे तौर पर बगाल से सीखा—फिर रूस, चीन, जापान और मिश्र म खाना-बदोशा की तरह मौत और जिन्दगी से खेलकर मिश्र का काला जादू हमारे हाथ लगा या अल्लाह! शुक्र है तेरा या उस्ताद तूने चिराग अलाउद्दीन को मेरा गुलाम बना दिया। हर मुल्क का बच्चा-बूढा-जवान मुझे मानता है।

मुझे उस नौजवान की ऊटपटाग बातें सुनकर कुछ हसी आई मगर वह बेलगाम बोलता ही रहा। उसकी आवाज धीरे धीरे बुलन्द होती गई आखा के गोले बाहर की ओर निकालता हुआ अपने दाहिने हाथ को हवा मे घुमाकर एक खास अन्दाज मे वह बोला—

आजा काली कलकत्ते वाली,
मिस्र की रूह जमाली,
ऐ मेरे उस्ताद ख्याली,
मेरा हुनर न जाय खाली,

ला—जल्दी ला—रूह अफजा—बुला शैतान का बच्चा कहा है। भेज दे एक लाह का डण्डा इस डिब्बे की पब्लिक बैठती नही—मैं अभी मिस्मरेजम पढता हू—सबकी जुबान कट जाएगी—खून बहगा—खून और वह बडी जोर स चिल्लाया—एक खौफनाक आवाज म—अलामीन'!

किसी तान्त्रिक के समान उसकी आवाज सुनकर डिब्बे के यात्री सहम कर जहा के तहा बैठने लगे। मैं भी भौंचक्का सा देख रहा था उस नौजवान का एक अजीब करिश्मा। अब सब की नजरें उस नौजवान पर लगी थी। वह मरी ओर मुखातिब हाकर बोला—बाबू साब' यह फकीर का पहला जादू था। अब देखत जाइय दूसरा और तीसरा!

मुझे लग रहा था कि जैस ड्राम का दूसरा सीन शुरू होन वाला हो। उस नौजवान ने अपने कन्धे पर लटकत एक झोले से लोह क विभिन्न प्रकार के छोटे बडे ताले निकाले—एक के बाद दूसरा ताला मुसाफिरो को दिखाता हुआ एक स्थान पर रखता हुआ एक बडे ताले की च। ँ च
हुआ बोला—यह ताली यानी कुजी बडी किस्मत वाली है। न

ताले के चारो ओर घुमाकर ताला खोलोग तो मालामाल हो जाओगे—खजाना तुम्हारे घर आयगा। आजमाना हो तो खरीदकर देखो। यात्रियों की ओर बढता हुआ वह बोला—'हा भई तो जिसको लेना हो बोल दना' असली अलीगढ का ताला है। जमन का लोहा हिदुस्तान का कारीगर—अगर आप हिदुस्तानी होकर हिदुस्तान का माल नही खरीदे तो देश का भला कैसे होगा। इस ताले का दाम बहुत सरता है। समझ लो हीरा पडा मिल गया—बीस रुपये वाला सिफ दस रुपये म दस रुपय वाला पाच रुपये म और पाच रुपय वाला दो रुपय मे भाई—यह मौका फिर नही आयेगा।

पूरा डिब्बा खामोश था। लोग उसक कहे गय शब्दो को तौल रहे थे और अपनी जेबें टटोलने लग थे।

उस ताले बेचने वाले ने फिर कहना शुरु किया—यह आखिरी बोली है—मेरे भाई—वल्लाह सोचते क्या हो? इस तरह सोचोग तो काश्मीर कैसे फतह होगा—निकालो दाम—एक दो और यह तीन—हा भइ अगर बडा नोट हो तो मैं तोड दूगा अगर माल म शक हो तो अभी मौका है—देख लो—परख लो—माल खोटा हो तो वापस—चार दिन के बाद भी—मैं हमेशा इस गाडी पर चलता हू—हजारो ताले बच चुका हू।

मैं सोच रहा था कि वह कहन को एक साधारण ताला बचन वाला है किन्तु उसके बोलने के लहजे म एक सम्मोहन है। इतने मे मैंने देखा कि पास बैठे लोगो के हाथ अपनी जेबा पर जाने लगे हैं। सौदा आरम्भ हो गया। देखते ही-देखते उसके पास झोले मे रखे तीस ताले हाथो हाथ बिक गये। कवल दो ताले उसके हाथ मे रह गये। मेरा भी मन हुआ कि शेष दो ताले खरीद लू कि इतने म एक यात्री ने हाथ बढाकर उन्हे भी बडे चाव से खरीद लिया। अब उसकी चलती फिरती दुकान बढ चुकी थी। अगले स्टेशन पर गाडी रुकी और वह ताले वाला बिक्री के नोट सम्हालता हुआ नीचे उतर गया।

मैंने सिगरेट का एक कश खीचकर लोगा पर लालसा भरी नजर डाली तो देखा लाग ताला का ऐस दख रहे थे कि जैसे उन्हे मुफ्त म नियामत मिल गई हो। डिब्बे म बठे अशिक्षित ग्रामवासियो की खुरदुरी हथेलियो

पर नकली पालिश के सितारो जैसे टीन के ताले चमक रहे थे। उनमे से एक ने आश्चर्य से कहा अरे! धोखा हो गया यह तो टीन के नकली ताले हैं। शेष लोग भी अपने हाथ मलते रह गये। सस्तेपन का मोह निराशा मे बदल गया। मेरी निगाहो मे आज भी सफ़र म वस्तुए बेचने वालो को देखकर उस वाक्पटु नूरी का चेहरा उभर आता है।

रेत की दीवार

जब कभी मेरे कमरे की खिडकी से बरसात के उमडत कजरारे मघ, कमरे के भीतर घुसने लगते हैं तो मरा मन सिहर उठता है और मरे मानस पटल पर शनै शनै अतीत के कई धूमिल चित्र उभर आत हैं। यह चित्र किसी गौरवशाली चित्रकार के रगीन चित्र न होकर गरीबी म डूबे असहाय लोगो के चित्र होते हैं। जिन्ह या तो हमारे समाज के क्रूर हाथो ने बनाया होता है या फिर मनुष्य ने अपनी बुद्धिहीनता से रगा होता है। इन मोटी मोटी काली पर्तों के पीछे, निस्तेज टिमटिमाती आखें, और भीख मागते नन्हे नन्हे बच्चो के सूखे हड्डियो वाल हाथ, शरीर पर लिपटे जर-जर चीथडे देखकर मेरा मन सिहर उठता है, आखिर यह सब क्या ? मजू बडी तल्लीनता से यह सब सोच रही थी—

शिमला हिमाचल की सुन्दर राजधानी है। जिसकी सुन्दरता को देखने के लिए हर साल असख्य नर नारी यहा आत हैं लेकिन इन नन्हे बच्चो को दखने वाला कोई भी नही। जिनका ना कोइ घर है ना ठौर ठिकाना।

अचानक सामन मेज पर पडे अखबार पर मेरी दृष्टि गई तो उसक मुख पृष्ठ पर मोटे मोटे अक्षरो मे लिखा था— 'अन्तराष्टीय बालवर्ष समारोह' बडी धूमधाम से मनाया गया। क्या यह सच है ? एक तरफ इतना बडा समारोह दूसरी तरफ यह भीख मागते असख्य बच्चे !

इसका दोषी हमारा समाज है या यह मासूम बच्चे। मजू यह सब सोच ही रही थी कि अचानक दरवाज़े पर लगी घटी बज उठी। वह चौंक कर बाहर गई। द्वार खोला तो देखा उसकी पडोसन शालिनी खडी मुस्करा रही थी। वह कुछ बोले कि शालिनी स्वय ही बोल पडी, अरे मजू तुम तो

लगता है किसी शोक सागर से निकलकर आई हो। सब ठीक है न ? अपने मन को सयत करते हुए मैंने कहा—'शालिनी तुम्हारे बच्चे कहाँ हैं ?'

किन बच्चो की बात करती हो, मजू ! मुझे तो शर्म आती है, अब तुम्ही बताओ कि आधे दजन बच्चो को लेकर मैं कहा जाऊ ? कभी-कभी तो मन बडा खीज उठता है। इस महगाई मे इतनी बडी फौज को पालना, कितना कठिन है। मजू यह सब सुनकर अवाक रह गई, और बोली— 'शालिनी तुम ऐसी बाते क्यो करती हो ? आखिर हैं तो वह सब तुम्हारे ही बच्चे।'

शालिनी दर्दमयी आवाज मे बोली—हा हैं तो सब मेरे ही बच्चे, किन्तु तुम्हें शायद यह नही मालूम कि दो लडकिया मेरी और चार लडकियां पहले वाली पत्नी की हैं। जिसे तुम्हारे भाईसाहब ने तलाक दे रखा है। क्या तुम जानती हो, क्यो ? क्योकि उस बेचारी के कोई लडका पैदा नहीं हुआ। मेरे पति की चार लडकिया इस उम्मीद मे हो गईं कि शायद अगली सतान लडका हो जाय किन्तु विधि का विधान कौन टाल सकता है। पति-पत्नी मे आए दिन इसी बात को लेकर झगडा होता रहता था। बात बढते बढते तलाक की नौबत पर आ गई। उसके पश्चात मैं अभागिन कहकर शालिनी फूट फूटकर रोने लगी। वह अपनी व्यथा सुनाकर अपना हृदय शात करना चाहती थी। आगे बोली—मजू मैं एक गरीब मा बाप की बेटी हू फिर भी मेरे माता पिता ने मुझे बी०ए० कराया कि शायद मैं उनका कुछ सहारा बन सकू।

इसी बीच मेरे पिता ने दहेज न दे सकने के कारण मेरा रिश्ता यहा से तय कर लिया। एक दिन अचानक, मेरी मा ने मुझे सूचित किया कि बेटी तेरा रिश्ता तय कर लिया है। लडके की एक शादी हो चुकी है लेकिन है पैसे वाला। क्या करें दहेज के अभाव का फिर कुछ है तू सुख से रहेगी बेटी। बात सुनकर शालिनी। मैं अपनी किस्मत पर छोडकर चुप हो गई। दुख भी था गुस्सा भी था लेकिन बूढे मा-बाप और उनकी गरीबी का ख्याल, घर से भी निकलना बडा मुश्किल था। शालिनी मुस्कान

हमेशा के लिए राजेश की हो गई । मजू मुमे लगता है मेरे माता पिता के लिए मेरा कुआरा शरीर एक नग्न शरीर के रूप मे था, जिसका विवाह के वस्त्रो से ढकना, उनके लिए आवश्यक था । यह ऐसा वस्त्र था जिसे पहन कर मुझे कोई सुख नही मिला । मैं इसे सहन भी न कर सकी और उतार कर भी नही फेंक सकती । मैं कभी मुस्कराना भी चाहती हू तो इन छ बच्चों का बोझ मुझे और पीछे ढकेल देता है । लोगो क तान सुन-सुन कर बेचारे ने दो शादिया भी की, फिर भी छ लडकिया ही पैदा हुई ।' अब मैं अतीत की कल्पना मे घबडा जाती हू । क्या करू क्या ना करू—कुछ समझ मे नहा आता, शालिनी फूट फूटकर बच्चो की तरह रोन लगी ।

मजू को लग रहा था शालिनी एक न ही मासूम लडकी के समान है जिसके खिलौने को किसी ने उसके सामने ही तोड दिया है । बस टूटे खिलौने के साथ वह नि सहाय सी खडी है । टूटे खिलौने स कोई खल नही सकता परन्तु टूटे खिलौने अपन खलने वाला का मजाक अवश्य उडा सकत है । मजू की आखे शालिनी की दु खद कथा सुनकर छलछला आइ । अपन को सयत कर वह बोली—शालिनी कितनी दयनीय अवस्था है । इस मध्य वग की नारियो की । जा आज भी ज्यो की त्या है । आह भाग्य की विडम्बना कितनी प्रबल होती है, फिर मैं सदा कम का प्रधानता देती रही हू । मैंन तुरन्त शालिनी स कहा तुम कोई नौकरी क्यो नही कर लेती ?

शालिनी ने उत्तर मे कहा—मध्यवर्गीय रुढिवादी परिवार की नारी के नात हमारे परिवार म स्त्री का नौकरी करना, पुरुष का अपमान माना जाता है । भले ही नारी का मौत की कगार पर खडे हाकर जावन क्या न बिताना पडे ।

मजू न एक ठडी सास ली । सचमुच हमारा य भारतीय समाज कितना रुढ़िवादी है । समाज क झूठे गौरव का ढाचा कितना जजर हो चुका है । शालिनी आधुनिक समाज का यह बरसाती सीलन प्रगतिवादी नीति का सारा बोझ हम जैस बुनियाद क पत्थरा का, हमारी भावी कल्पना को तहस-नहस कर दगा । शालिनी और मजू म दुख की यह गाथा अब एक गहन चर्चा का विषय बन हा गई थी । अचानक घटा बजी और वार्ता लाप का सिलसिला टूट गया । हकबका कर मजू न दरवाजा खाला तो

देखा उसके मैनेजर पति अरविन्द के साथ राजेश भी खड़ा था ? दोनो को अन्दर ड्राइंग रूम मे बैठाकर, मजू किचन मे नौकर को चाय बनाने के लिए कहने चली गई।

शालिनी राजेश के साथ चलने को हुई कि तभी मजू वापस आकर बोली—'अरे एक कप चाय तो पीती जाओ। हम लोग बातों म इतने उलझ गय कि एक कप चाय भी न पी सके।

शालिनी अतीत मे खोई राजेश के साथ जाने को उतावली हो उठी। तभी राजेश बोला अब मजू जी कह रही हैं तो बैठ भी जाओ, मगर यह तो बताओ कि ऐसी कौन-सी बातें थी जिसमे तुम्हे यह भी ध्यान न रहा कि बच्चे स्कूल से आने वाले हैं।

मजू बोली कोई विशेष बात नही थी मैं बच्चो को नौकर भेजकर यहा बुलाये ले रही हू।

यह देखकर, मजू के पति मैनजर साहब को बडा आश्चय हुआ, कि आज मजू को क्या हो गया है। इसस पूव मजू केवल उच्च वग की महिलाओ का ही आदर-सत्कार करती थी। मनजर साहब बोले—कमाल है राजेश! मजू म बडा परिवतन आ गया। नही तो आपन राम को तो रोज ही नौकर के हाथ की चाय पीनी पडती है। आज तो मजू न सबक लिए चाय स्वय बनाई है।

मजू को पहली बार एक भारतीय नारी के गौरव का अनुभव हो रहा था। बीच म ही राजेश बोल पडा—हा तो मुझे भी पता चले कि आप लोगो म क्या बातें हो रही थीं ?

मजू बोली बात यह है कि अब जमाना बदल रहा है, और बदलते समय को न पहचानना, कोई बुद्धिमानी नही है। यद्यपि अतीत को भुलाया नही जा सकता, किन्तु आने वाले समय को सुधारन मे उस अनुभव स लाभ तो उठाया जा सकता है। तब तक नौकर शालिनी के स्कूल स लौटे-थके-हारे बच्चो को लेकर आ गया। बच्चे इससे पूव मैनजर साहब के घर आन स डरत थे। परन्तु आज इतना बडा परिवतन देखकर वह भी अचम्भे मे थ। मजू न बडे प्यार स बच्चों को खाना खिलाया और खेलने क लिए अपन पुत्र पुनीत के बहुत सारे खिलौने दिय।

मजू ने कहा राजेश बात यह है कि अब हमे परिवार नियोजन पर कुछ सोचना ही पडेगा। अन्यथा हमारा समाज एक दिन राख म मिल जायेगा।

राजेश मजू के इस अथपूण वाक्य को सुनकर शर्माते हुए बोला—आप ठीक कहती हैं, अगर आपने कुछ वष पूव अपने घर चाय पर बुलाया होता तो मैं इतने बडे सकट मे बच जाता। राजेश को अपनी गलती स्वीकारते देखकर अरविन्द बाबू कहने लगे—कोई बात नही राजेश, सुबह का भूला शाम को घर वापस आ जाये तो वह भूला हुआ नही कहलाता। किसी गलती से बचने के लिए प्रायश्चित सबस बडी औषधि है।

इतना सुनकर राजेश बोला किन्तु इसके लिए क्या परिवार नियोजन ही पर्याप्त है प्रत्यक पुरुष चाहता है कि उसका वश आग चले, आखिर इस मनोविज्ञान का निदान क्या है ?

मजू इस तक क समक्ष झुकने वाली नही थी। यह सुनकर बडे तपाक से बोली—हा जी कहने सुनन म ता यह ठीक लगता है किन्तु जीवन जीने म यथाथ रूप म इसम परे है। क्या इस सत्य को नकारा जा सकता है ? यदि पुरुष का प्रतिरूप लडका खराब निकला तो तुम उसे परिवार का गौरव मानोगे या कवल भाग्य की विडम्बना कहकर टाल दोग ?

हमारे भारत का इतिहास इस सत्य का साक्षी है कि लक्ष्मीबाई, झासी की रानी बगम रजिया इत्यादि अनेको वीरागनाओ न पुरुषो स बढकर इतिहास गढा है। य नारिया जयचन्द मीरजाफर इत्यादि अनेक सुविख्यात मर्दों म कही अधिक अपन परिवार व देश को सम्मान दिलान म सफल सिद्ध हुइ हैं। इतना ही नही, उनक नाम आज भी स्वण अक्षरा म इतिहास क पन्नो पर अकित है।

राजेश मजू की तकसगत बाता क आग नतमस्तक हो गया। अन्त म उम स्वीकार करना ही पडा कि मजू सच ही कह रही है। पुत्र या पुत्री का भेदभाव केवल रेत की उस दीवार क समान है जो कभी भी गिर सकती है। यह परम्परागत रूढिवादी सस्कार आज की सामाजिक व्यवस्था क लिए बड घातक हैं जो पुत्र की लालसा म स्वय माता पिता का एक दूसर म अलग कर रहे हैं। नारी का यदि उचित परिवेश तथा अवसर प्रदान किए जाए तो वह पुरुषो क कधे स कधा मिलाकर समाज म एक अद्भुत सतुलन ला सकती है। इसके लिए हम अपन विचारों म परिवतन लाना आवश्यक है।

सध्या

कभी कभी अतीत की परछाइयाँ इतनी सजीव हो उठती हैं कि उनसे बिना बात नहीं रहा जाता और जब कभी उनसे बोलने बैठती हूँ तो जी उदास हो जाता है और फिर ऐसा लगने लगता है कि किसी का सूर्य-सा चमकता चेहरा हर रोज किसी निराश साम की प्रतीक्षा मे निस्तेज होकर डूब जाता हो या फिर उनके दिन दफन का इंतजार करना हो ।

हाँ ! तो मैं कह रही थी किसी अतीत की यादगार की बात ऐसी ही एक मुश्किल साथ या मेरी पडोसन सध्या सोम टूट रही थी। शिमला जैसे अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पहाडी नगर म उसका घर अ प्रकार में डूबा था। बढती महगाई के कारण उसके घर का बिजली का बिल इस माह अदा नहीं हो सका था। उनके घर की बिजली का कनेक्शन कट गया था। वह बच्चा पर बुरी तरह चल्ला रही थी। रीना मीना नीना इन्दु बबलू और मुन्ना जन जाये दजन बच्चा की मा बनने के पश्चात् अब सातवें आगन्तुक शिशु के नाम की प्रतीक्षा म चपेड हो चली थी। उसका चाद-सा चेहरा कदन अब हड्डियो का ढाचा मात्र रह गया था। उसका पति रमेश वर्षों पुराने गर्म सूट के टूटे हुए बटन लगाने के लिए सध्या पर ताव खा रहा था। उस समय एक टुकडा मोमबत्ती भी घर म नहीं थी। आज उन अवसर पर नये साहब की स्वागत पार्टी म शामिल होने 'देविको रेस्ट्रा' म जाना था। अगर देर न पहुचा तो हो सकता था कि उसे पदन नये साहब की वक्र दृष्टि का शिकार होना पडे। सध्या चिल्ला रही थी—कम्बख्तो मानवता कहा है? बच्चे सहम मे चुप थे। उनके मोम से कोमल ... रह थ। बडी लडकी रीता मा बाप के विरुद्ध ...

प्रतीक्षा म थी अभी उसकी पडोसन सावित्री न दरवाजा खटखटाया। सध्या न अधेरे मे ही दरवाजा खोला तो देखा सामन सावित्री खडी थी—अरे वहन तुम ? कहो कैसे इस समय आना हुआ' ?

—वहन दो पीस डवल राटी के हो तो दन की कृपा करो। अचानक ही काई मेहमान इस समय घर म आ गया है।

सध्या अपनी पडोसन की वात सुनकर सन्न रह गई। आज कई दिन बाद बच्चो की जिद्द पर उसने आधी डबल राटी बच्चो के जमा पैसा से खरीदी थी। वह घोर धर्म सकट मे पड गई। अपनी पडोसन को मना भी नहीं कर सकती थी और न ही अपने बच्चो का कोमल हृदय तोड सकती थी। एक क्षण विषाद की रखा उसके चेहरे पर उभर आई किन्तु दूसरे ही क्षण उसन सभ्यता की आडम्बरी मुस्कान बिखरत हुए कहा। देखती हू वहन शायद कुछ पीस किचन मे पडे हा और तुरन्त किचन मे डवल रोटी के पीस लेने चली गई। कुछ क्षण बाद वह लौटी तो उसके हाथ म डबल रोटी का पैकट था। पैकट सावित्री को एक धराहर के रूप मे दती हुई वोली यह लो बहन !

सावित्री डवल रोटी के पीस लेकर घर स वाहर चली गई।

सध्या सोच रही थी कि उसक बच्चे कहा डवल रोटी की फरमाइश न कर बठें। तभी उसके पति रमेश न आवाज दी, अरे भई अगर पडासन से गप्पें लड चुकी हो तो मरे कोट म बटन टाक दो।'

सध्या हडबडा गई—उसने किसी तरह अधेरे म अदाज स बटन टाक दिय। उस लग रहा था कि जैस वह अपनी फूटी किस्मत पर पबन्द टाक रही हो। पति शीघ्र तैयार होकर पार्टी म चला गया। और सध्या अपने जीवन के आर्थिक अधेरा म खोई सोच रही थी—काश उसके आधे दजन बच्चे न होत ता वह आज इस आर्थिक कठिनाई म न फसती। पता नही कब भारतीय मा की परम्परागत रुढिवादी परिभाषा वदलगी। मन का अन्तरद्वन्द्व कह रहा था कि यदि उसन और उसक पति न जरा भी विवक और सयम स काम लिया होता तो वह आज इस तनावपूर्ण मानसिक उलझन से मुक्त हाती। किन्तु उसका दूसरा तक कह रहा था कि जो तीर तरकश से निकल चुका है वह वापस नही आ सकता। स्वयन्वीते समय और बच्चा

का करने से कोई लाभ नहीं। आज भी वह इस निराशा से निकलकर आज की पीढ़ी तथा अन्य ऐसे परिवारों को रास्ता दिखा सकती है। क्यों न वह आज से यह संकल्प करे कि चल रहे सरकारी परिवार नियोजन के अभियान में समय निकालकर हाथ बटाए।

वह इसी उधेड़बुन मे खोई थी कि उसका छोटा लड़का नटखट मुन्ना उसके समीप आकर बोला—'मां चुप क्यों हो? सन्ध्या के गले मे बाहें डालते हुए वह पूछ बैठा मां क्या आज भी डैडी ने तुमसे लड़ाई की है। तभी तो वह कहीं सूट पहनकर चले गये हैं।

मुन्ना की बाल सुलभ बातें सुनकर सन्ध्या का दिल पसीज गया। थोड़ी देर पहले की झल्लाहट और मानसिक चिन्तन को दबाकर वह हंसकर बोला—नहीं बेटा ऐसी बातें नहीं करते। मां को हंसता देख बच्चों के सहमे चेहरे खिल उठे। टुन्नू ने अपनी मां का अच्छा मूड देखकर अपने मित्र से मांगी से मांगे गए छोटे से ट्रांजिस्टर को ऑन कर दिया। चल रही क्रिकेट की कमेन्ट्री को सुनने के लिए किन्तु ट्रांजिस्टर पर दिल्ली से समाचार आ रहे थे। बाढ़ से सैकड़ों परिवार बेघर हो गये। लगातार भुखमरी व अकाल से लोग अपने बच्चों को या तो बेच रहे हैं या उन्हें अनाथ छोड़कर रोजी की तलाश में शहरों की ओर भाग रहे हैं।

यह समाचार सुनकर सन्ध्या का जी निराश हो गया, उसे लगा जैसे वह अपने बच्चों की बात सुन रही हो। उसके धीरज का बांध टूट गया। वह सहसा रो पड़ी। बच्चे फिर सहम गये और चुपचाप अपने बिस्तरों मे दुबक गये। सन्ध्या न जाने किस अनजान आशंका से अपने बिस्तर पर मानसिक बोझ में ऊंघने लगी। उसे लग रहा था कि अब शीघ्र ही उसके सामने अंधेरे में खड़ा विशालकाय आर्थिक समस्याओं का राक्षस उसे निगल लेगा।

तभी समय उसके पति रमेश ने घर मे प्रवेश किया। सन्ध्या चौंककर बिस्तर पर बैठ गई और आंखें मलती हुई बोली—अरे आप आ गये ला, अच्छा ही हुआ बड़ी देर कर दी।

रमेश को आज सन्ध्या के यह वाक्य बड़े अटपटे लगे। वह बोला—क्या आज कोई नई बात है? मैं तो हर रोज देर से ही आता हूं आज यह जवाब तलबी कैसी? क्या आज मेरा खास ख्याल है?

नही ऐसा तो कुछ नही है। सध्या न अपन को सयत करत हुए कहा। वास्तव म बात यह है कि आज मैंने एक नया सक्ल्प किया है।

राजेश तपाक से बोला— मुझे पता है तुम्हारा सक्ल्प क्या हागा ?'

सध्या न नित्य चिडचिडे मूड के स्थान पर राजेश को चिटान क मूड मे कहा—'अच्छा तो आप ज्योतिष विद्या भी मीख गय क्या ? जो बिना बताये ही मेरे मन का सक्ल्प जान गय। क्या नय साहब की पार्टी म स कोई दिव्य ज्योति प्राप्त कर आए है ?

रमेश कुछ गुस्से से बोला— हर मद को तुम जैसी स्त्रियो के साथ रहकर ज्योतिष का ज्ञान हो ही जाता है। तुमन यही सक्ल्प किया होगा कि कल तुम अपन मायके चली जाओगी। मैं दफ्तर और परिवार की चक्की म अकेला पिसना रहूगा। इसक अलावा दूसरा सक्ल्प तुम्हार पास हो ही क्या सकता है, जीवन सघष स लडन की बजाय तुम स्त्रिया आमू वहाना जानती हो।

सध्या इन शब्दा को सुनने के लिय तैयार न थी। वह बोली, नही यह गलत है। राजेश ने इस बार ममझौत के स्वर म कहा यदि यह गलत है तो फिर सच क्या है ? इतनी दर मे पहेलिया क्या बुना रही हो। साफ साफ कहो तुम्हारा निश्चय क्या है ? मुझे अब तुम्हारा कोइ स य डरा नही सकता चाहे वह कितना ही कडुवा क्या न हा।

स ध्या ने अपने पनि की नाजुक मन स्थिति समझकर अपने सकल्प की गोपनीयता की सीमा ताड दी और बाली— मै। आज निश्चय किया है कि आज से म आपका सच्ची सहचरी बनूगी।'

राजेश फिर सध्या पर उबल पडा— बाला अभी तक क्या तुम किसी और की सहचरी थी ?

नही ! सध्या का उत्तर था मेरा मतलब है कि मैं अब इस आर्थिक सक्ट म लडने क लिय कोई एसा काम करूगी जिससे सम्मान सहित समस्या का कोइ समाधान निकल सक। कुछ धन उपाजन हो सके। मैं झूठी सभ्यता का इन आडम्बरी दीवारो को ताड दूगी। एक नारी घर मे रह कर भी धन उपाजन कर सकती है। मैं अब परिवार के काम काज स कुछ समय निकालकर बच्चा क सहयोग स सिलाई-बुनाई कर कागज़ क लिफाफ

बनाकर पडोस के छोटे बच्चो को पढाकर आपका हाथ बटाने की आज्ञा चाहता हू। आखिर आपकी इस छोटी-सी नौकरी से कैसे काम चलेगा। मैं यह भी चाहती हू कि आज से अपनी अनको अबोध बहनो तक यह सदेश भी पहुचाया जाए, कि सच्चे अर्थों मे नियोजित सीमित परिवार का अर्थ और लाभ क्या है।

रमेश सध्या के इन उच्च आदर्शों को सुनकर हतबुद्ध-सा रह गया। उसे लगा कि जैसे वह कुछ बहकी-बहकी बातें कर रही हो।

वह विचार सागर म डूबने-उतरान लगा। उसकी आखो के समक्ष अपने उन मित्र-परिवारो के चित्र आ उपस्थित हुए जिनकी पत्निया घर पर ही छोटे छोटे काम धधे करके परिवार को चलान म पति का सहयोग देती हैं। उसके एक सहयोगी की पत्नी निरक्षर महिलाओ के लिए अपने घर म आगनवाडी चलाती है। सरकार से उसे इस काम के लिए सहायता मिलती है। एक मित्र की पत्नी गाधी आश्रम के सहयोग से अपने घर पर ही एक महिला आश्रम चलाती है—जिसमे महिलाए सूत कातना, कपडे सीना, चीनी मिट्टी के खिलौने बनाना जैसे कई काय करती हैं। सरकार ने महिलाओ के लिए अनेक नई योजनाए विकसित की हैं—परिवार नियोजन के लिए अशिक्षित महिलाओ पुरुषो को प्रोत्साहित करने वालो का पुरस्कार देना घर घर जाकर डाक जमा योजनाओ के लिए सदस्य बनाना अब तो जीवन बीमा वाले भी महिलाओ को अपना प्रतिनिधि बनाने मे प्रमुखता देते है महिलाए पुरुष प्रतिनिधियो की अपेक्षा अधिक सदस्य ग्राहक बना लेती हैं। इन सब कामो से महिलाए अपने खाली समय के उपयोग के अतिरिक्त एक अच्छा खासा आर्थिक सहयोग प्राप्त करती हैं।

रमेश सोच रहा था—क्या उसकी पत्नी भी उन महिलाओ की तरह कुशलता पूर्वक ऐसे काम कर सकेगी। इन कामो से उसे आर्थिक सहयोग भी मिलेगा और सध्या का समय भी उपयोगी बन जाएगा।

बच्चे भी अपनी मा को काम करते देखकर महनती और लगनशील बन जाएगे। अपने मानस मथन के बाद वह सध्या की ओर स्नेहसिक्त दृष्टि से निहारने लगा।

वह अपनी पत्नी के दृढ स्वभाव से भलीभाति परिचित था। एक मशा

की दृष्टि अपनी पत्नी पर डालते हुए वह बोला— क्या सच मे तुम इन शुभ कामो के लिये समय निकाल पाओगी ?'

सन्ध्या ने अपने दृढ स्वर मे रमेश की शका को निमूल करते हुए कहा समय तो हम जैसी नारियो के पास बहुत होता है केवल उसका सदउपयोग करने का साहस नही होता। यही कारण है कि आज तक मैं एक अपाहिज स्त्री ही बनी रही और स्वय अपने चारो ओर निराशा का जाल बुनती रही। अब मैं आशा की एक किरण बनूगी—आखिर इस देश मे अनेको स्त्रिया ऐसी भी तो हैं जो अपने सुखी परिवार के साथ साथ प्रात व देश का शासन सम्भालने मे सफल सिद्ध हुई हैं। डॉक्टर-नर्स-अध्यापिकाएँ-राजनेता और शिशु शालायें चलाने वाली अनेक महिलाए इस सत्य की सजीव मूर्तिया हैं।

दायरे

अनुपम उस दिन अपने गाँव ठाकुरपुर में एक छोटे से कच्चे तालाब के किनारे बैठा मनका का बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहा था। मनका उसके गाव की कहारिन की छः साल की अबोध बालिका का नाम था। मनका की मा गाव के कच्चे तालाब में सिंघाड़े की बेल डालकर अपने छोटे से परिवार का गुजारा करती थी। मनका अपनी मा की एक मात्र सन्तान थी। मनका का पिता घोर गरीबी से संघर्ष करते हुए तपेदिक का शिकार हो चुका था। मनका को हरे रंग की चूड़िया पहनने का बड़ा चाव था। वह अनुपम के घर बर्तन साफ करने का काम करती थी। अनुपम जब शहर अपनी पढ़ाई के लिये गया था तो उसके परिवार के सदस्यों ने उससे कई चीजें लाने को कहा। अबोध मनका एक कोने में खड़ी सोच रही थी कि वह भी कुछ फरमाइश छोटे कुँवर अनुपम से करे। लेकिन उसका साहस न हुआ। अनुपम की पैनी नजर उस पर पड़ी। उसके मनोभाव को ताड़ते हुए उसने तपाक से मनका से पूछ लिया—अरे! मनका तू भी कुछ मंगा ले मैं शहर जा रहा हूँ।

छोटे कुँवर से अपने मन की बात छिपाते हुए उसने बड़े संकोचवश लजाकर कहा—कुँवर जी मेरे लिये बस हरी चूड़िया ले आना! याद रहेगी मेरी बात।

अनुपम बोला—हाँ-हाँ मैं तेरे लिए जरूर हरी चूड़िया लाऊँगा। चाहे सब की चीजें भूल जाऊ और खिलखिला कर हँस पड़ा। मनका अपराधी के समान लजाकर बाहर चली गई थी।

अनुपम जब दीवाली के अवकाश में गाव लौटा तो सिंघाड़े वाले

के किनारे जाकर बैठ गया। वह सोच रहा था कि मनका अपनी मा के साथ जब तालाब पर आयगी तो मैं उस फरमाइश की गई हरी चूडिया दूगा, उन्हें पाकर बेचारी कितनी खुश होगी। काफी समय बीत गया मनका तालाब पर नही आई। वह उदास हो उठा। जब उसका मन ऊबने लगा तो उसने नजदीक पडा एक मिट्टी का ढेला उठाकर तालाब के शान्त जल मे फेंक दिया। शीशे से स्वच्छ जल म चक्करदार गोल घेरे बनने लगे। एक के बाद एक छोटा घेरा बडा आकार धारण करता गया। अनुपम उन बनते बिगडते गोल दायरो को एकटक देख रहा था।

तालाब के जल पर तिरता दर्द शनै शनै उसके मन पर अंकित एक विशाल आकार धारण करता गया। वह खोया खोया सा सोच रहा था विश्व के विध्वसकारी इतिहास के भूले बिसरे पन्ने एक एक कर खुलने लगे। विशाल राष्ट्रो के बीच सम्भावित महायुद्ध, नरसहार, रक्तपात, मानसिक तनाव—आखिर यह सब क्यो? उसके अन्तर म छुपी व्यथा कह रही थी कि यह सब केवल ऊच-नीच के कगार पर खडी मानवता के लिये कलक है। कही राजनतिक घेरे हैं तो कही सास्कृतिक दीवारें। सच तो यह है आज मनुष्य ने अपना वास्तविक रूप ही खो दिया है। आज कही विज्ञान की चुनौतिया हैं तो कही आध्यात्मवाद के थोथे आडम्बर न उन्हें लपेट रखा है।

अनुपम के मन पर दर्द की परतें जमती गइ किन्तु मनका अभी तक नही आई थी उसका मन आशकित हो उठा।

उसी समय मनका का चचेरा भाई रामदीन चरवाहा उधर से निकला। तालाब के किनारे ठाकुर के लडके अनुपम को देखकर बोला—भैया यहा अकेले कैसे बैठे हो?

अनुपम न उससे पूछ लिया—अरे रामदीन तेरी बहन मनका कहा है? आज तालाब पर सिंघाडे की बेल से सिंघाडे तोडने नही आई। मैं उसके लिए शहर से हरी चूडिया लाया हू।

रामदीन बोला भैया वह तो जमीदार के घर शादी के जूठे बतन धो रही होगी। बारात आने वाली है और तुम यहा बैठे हो।

अनुपम दुखी हो उठा। और सोचने लगा कि मनका किसी ठाकुर के घर चन्द रोटी के टुकडो के लिए विवाह उत्सव पर दिये गये भोज के बडे-

चडे जूठे कालिख से पुते बर्तन अपने कोमल नन्हें-नन्हे हाथो से साफ कर रही होगी जब कि उस घर मे अन्य बच्चे खिलखिलाकर हस रहे होगे । उस बालिका का जीवन विशाल पत्थरो के नीचे दबी कोमल पीली उस दूब के समान होगा जिसे कभी भी स्वस्थ्य वायु तथा सूय की धूप नही मिलती ।

अनुपम के मुख मडल पर विद्रोह की लालिमा दौड गई । विद्रोही मन कह रहा था—काश वह अपने सकल्प रूपी धन से इन बोझिल चट्टानो को तोड सकता । चमकते पीतल के बडे-बडे जूठे बर्तनो पर लगी कालिख के समान सभ्य समाज के मुख पर ऊच-नीच की कालिख पुती है । धनवान निधन बालका स किस प्रकार अमानवीय काय कराते हैं । इस अन्तराष्ट्रीय मनाय जाने वाले बाल वष म भी न जाने कितने निरोह अबोध बालक शहर म सुसभ्य सुसज्जित होटलो मे अपना तथा अपने परिवार का पेट पालने के लिय रात दिन काम करते हैं । क्या कभी व बालक इस दासता से मुक्त हो पायेंगे ? शहर की जगमगाती रोशनी मे कितने निराश अधेरे हैं । कितनी कहानिया उसके मानस-पटल पर उभर आई । अपने बचपन मे उसने नाना प्रकार के अत्याचार स्वय अपने घर तथा गाव मे देखे थे । जब मैट्रिक पासकर उच्च शिक्षा के लिए वह शहर गया तो उसने शहर की सडको पर नगे बदन भूखे श्रमिक तथा भिखारी बच्चे देखे । उसका मन व्याकुल हो उठा था उन्हे देखकर । समाज मे कितना असतुलन है । एक ओर दिल दहला देने वाले मार्मिक दृश्य और दूसरी ओर धनवानो के शरीर पर आलीशान वस्त्रो के साथ छिडके गये कीमती सुगधित इत्र की खुशबू । आलीशान होटलो म भोज और प्यालो म छलकती मदिरा पकवानो की सुगध और होटल के बाहर जूठन के ढेर म पेट की भूख मिटाने भिखारी बालक रेलगाडी मे यात्रा करते अक्सर उसने बडे स्टेशनो पर भोजन की थालियो मे बची जूठन पर झपटते कुत्तो तथा बच्चो को देखा था ।

आज भी तालाब के किनारे बैठे हुए उस सामने तालाब की लहरो पर निरत समाज के विभिन्न रूप साकार दिखाई पड रहे थ । जब व आकार कुछ कहना चाहते थे तो हवा का झोका उन लहरो के घेरो का अस्तित्व ही मिटा देता था । रूप तथा मान की भ्रान्ति उसने पुस्तको न ... भी

किंतु आज उस शान्ति के वही मांसल लोथड़े रक्त से सने दिखाई पड़ रहे थे। संध्या हो चली थी। दूर खजूर के वृक्षों के पीछे सूर्य का लाल गोला अस्त होने लगा। उसकी लाल लम्बाई तालाब के जल पर अपनी छायाएं बिखेरने लगी थी। वह न जाने क्या क्या सोचता रहा। तालाब के जल पर हवा के थपेड़ों से अनगिनत दायरे छोटे से बड़े और बड़े से छोटे होते हुए सशक्त किनारों के गर्भ में समाते रहे। उन्हें उन साहिलों ने सहारा न दिया। ऐसे ही न जाने कितने दायरे बनते और बिगड़ते रहेंगे।

मनका अभी तक नहीं आयी थी। अनुपम अब उसके बारे में सोचने लगा। मनका का बाप उसके बचपन में ही मर गया था। मां लोगों के घरों में दिन भर बर्तन साफ करके पेट भरने लायक बचा खुचा भोजन पाती है। अपने साथ वह छोटी अबोध बालिका मनका को भी काम में लगाए रखती है। बड़े होकर भी मनका यह सब करेगी। इन गरीब बच्चों का जीवन भी क्या है गन्दगी में खेलो, पलो और जूठन खा-खा कर अपनी जवानी को धनवानों के रहम पर छोड़ दो। गरीब की कन्या सुंदर हो तो ये धनवान उसे अपनी अंकशायिनी बनाना चाहते हैं। और उनसे कहा कि इन्हें अपने घर की दुल्हन बना लो, तो उनका मान सम्मान उनका समाज उनके आड़े आ जाता है। ऊंच नीच की दुहाई देने लगते हैं लेकिन उन्हें नष्ट करते समय ये लोग नहीं सोचते कि वे नीच हैं।

मनका भी तो सुंदर है उसका भरा भरा आकर्षक चेहरा, सुतवां नाक बड़ी बड़ी आंखें अनुपम को उसके भविष्य के बारे में सोचने पर विवश कर रही थी। मनका का भविष्य क्या होगा? क्या वह भी इन क्रूर धनवानों के हादसे का शिकार बन जाएगी? क्या उसका सारा जीवन, उसकी जवानी इनकी जूठन साफ करते ही बीत जाएगी? समाज रूपी समुद्र की इन लहरों के थपेड़ों से उसे कौन बचाएगा? उसके अंतरमन में संघर्ष चल रहा था। क्या होगा मनका का? उसे स्मरण हो आया जब वह शहर जा रहा था तो उसने कितनी मनुहारपूर्वक कहा था छोटे कुंअर शहर से मेरे लिए हरे कांच की चूड़ियां ले आना कितना उल्लास, कितना प्यार छलक रहा था उसकी आंखों में।

अंधेरा घिरने लगा था। अनुपम किसी निश्चय पर नहीं पहुंच पाया

था। बार-बार उसके मानस-पटल पर एक ही प्रश्न चोट कर रहा था— मनका का भविष्य क्या होगा ? चिन्तन मनन करते हुए उसके हृदय से एक आवाज आई—अनुपम तुम ही तो उसका भविष्य हो। तुम जैसे नौजवान मनका जैसी कलियों को पुष्पित होने का अवसर नहीं देंगे तो और कौन देगा। कल के समाज के कर्णधार तुम्हीं युवक हो। राम ने भी तो शबरी के जूठे बेर खाये थे, उसका उद्धार किया था। शबरी भी तो छोटी जाति की थी—भीलनी। अनुपम तुम राम बनो ! समाज के सामने आदर्श उपस्थित करो। एक से ही अनेक बनते हैं। पुरुष पुरुषार्थी होता है। साहस से आगे बढ़ो ! साहसी पुरुषों का भविष्य उज्ज्वल होता है।

कदमों की पदचाप से उसकी तन्द्रा टूट गई। उसने मुड़कर देखा— मनका आ गई थी। उसने लजाकर गर्दन झुका ली। उसके मुख पर कैशोर्य आभा लालायमान हो उठी।

अनुपम एक निश्चय के साथ मनका को साथ लिए तालाब से घर लौट रहा था। वह मनका सी बालिकाओं के भविष्य को संवारेगा। उन्हें एक नयी दिशा देगा। ऊंच-नीच, गरीब अमीर के भेदभाव को मिटायेगा।

झुलसते गुलाब

रणधीर अपनी फियट गाडी म बैठा सोच रहा था सुनील के घर Birth day Party मे जाने को वह लेट हो रहा है और उसकी पत्नी माधवी अभी तक शृंगार म ही लगी हुई है। लखपति होने का अथ किसी क यहा मेहमानी म देर स पहुचना नही है। उसन कार म बठकर हान बजाया। मगर बकार, बीस मिनट और बीत गए। वह झल्लाया सा गाडी स नीचे उतरकर क्रोधित मुद्रा मे कमरे के अन्दर पहुच गया। माधवी अभी साडी बदल रही थी। वह उस पर बरस पडा माधवी अगर तुम समय पर तयार नही हो सकती तो मुझे साफ साफ मना कर दिया करो। मैं अकेला ही चला जाया करूगा। आज भी तुमन पार्टी म चलने म इतनी देर कर दी !

माधवी ने आव देखा न ताव। उसन इट का जवाब पत्थर से दिया तुम्हारी गाडी का हान सुनू या तुम्हार आधे दजन बच्चा का मधुर सगीत ? आखिर मैं भी इन्सान हू, कोइ मशीन नही। मैं तो तैयार हो गई थी पर डब्बू ने पेशाब कर दिया, अब साडी बदलना भी क्या गुनाह है।

नही माधवी कसूर ता मरा है जो तुम जसी स्त्री स विवाह कर लिया ?

अच्छा ! अगर ये तुम्हारा गुनाह है कसूर है तो इसका प्रायश्चित क्या नही कर लेत। कर लो किसी बाझ स्त्री स शादी और निकाल दो मुझे अपने घर से। न रहेगा बास, न बजेगी बासुरी।

बस ! यही तो है तुम्हारा मूखता भरा उत्तर। घर क्या है नक बन गया है। नक से भी बुरा लगता है मुझे आजकल। व्यापार से ही फुसत नही मिलती। अगर उसस फुसत मिले और मैं तुम्हारे साथ एनज्वॉय करन क लिए सोचू या कही जाना हो तो तुम पर पहाड टूट पडता है। मरी खुशी

से तुम्हें जलन होती है ।

जलन तो तुम्हे होती है मेरे बच्चो से और मुझसे । गुस्से से माधवी का चेहरा लाल हो उठा था । इसी समय उसकी पडोसिन शीतला ने प्रवेश किया । अरे क्या हो गया माधवी ? क्या कही जल गई हो ? क्या आज तुम्हारा नौकर नही आया ? लाओ मैं जले पर बर्नोल लगा दू । मुझे बताओ कहा कहा जलन है ?

माधवी खून के आसू पीकर सतुलित स्वर में बोली—कुछ नही बहन ऐसे ही कपडे प्रेस करत समय गम प्रेस जरा छू गया था। कोई खास नही जली, ठीक हू । कहो तुम्हारे क्या हाल हैं ?

मैं ठीक हू शीतला बोली । बस थोडी देर मे वे भी दफ्तर से आत होगे । मैं यह कहने आई थी कि आज रात म मेरे यहा सगीत समारोह है । तुम लोग अवश्य आना । भाई साहब तो व्यस्त होगे पर तुम जरूर आना ।

शीतला की बात का माधवी जब तक उत्तर देती कि शीतला चली गई ।

रणधीर अपने बारे मे व्यस्ता का तक सुनकर और ज्यादा चिढ गया । उसकी दृष्टि मे सारी स्त्रिया एक जैसी लगी किन्तु फिर भी ईर्ष्या से उसका हृदय जल उठा । उसे ध्यान हो आया कितना सुखी परिवार है पडोस मे रहने वाले सुनील और शीतला का । दो बच्चे—एक लडका इजीनियरिग कालिज म पढ रहा है और दूसरी छोटी लडकी मेडिकल कॉलिज म प्रवेश की तैयारी कर रही है । अधेड हो जाने पर भी सुनील और शीतला की जोडी ऐसे लगती है जैसे वह नव विवाहित दम्पति हो प्रत्येक शनिवार को घर म कोई-न-कोई उत्सव मनाते हैं । दस पाच मित्र एकत्र होते हैं मिलते है हसत गाते हैं। कभी कीर्तन, कभी सगीत समारोह कभी पिकनिक कभी जन्म दिन पार्टी और कभी कुछ और उत्सव । यह सब कसे कर लेत हैं ये लोग । सुनील बाबू की तनख्वाह तो कोई खास नही । उसका मन अनजाने मे ही उस सुखी परिवार के रहस्य मे उलझ गया । उसका शरीर शिथिल हो गया । वह कमरे म रखे सोफे पर धम्म से अचेत-सा बैठ गया ।

ठीक यही स्थिति माधवी के मन मे थी । उसके मन मे हलचल हो रही थी । वह सोच रही थी । मेरा स्तर पडोसियो से कही अधिक

है। धन, दौलत मान, सम्मान नौकर चाकर आधुनिक सुख-सुविधा के सभी साधन मेरे पास हैं फिर भी हमारे यहां पारिवारिक शान्ति नहीं है। आखिर क्या कारण है ? उसे अपने आप से नफरत होने लगी और पड़ोसियों से ईर्ष्या। तभी टेलीफोन की घण्टी बज उठी।

रणधीर ने फोन नहीं उठाया और न ही माधवी ने। घण्टी लगातार बज रही थी। माधवी ने मजबूर होकर टेलीफोन का रिसीवर उठा लिया। फोन पर रणधीर के मित्र की बीवी बोल रही थी। माधवी बहन क्या बात है, आप लोग ठीक तो हैं ! क्या बात है ? जन्म दिन पार्टी पर सभी लोग आ गए, बस आप लोगों का इन्तजार है। आप लोगों के इन्तजार में केक काटने की रस्म रोक रखी है। आप लोग आ रहे हैं न ?

माधवी ने दबी आवाज में उत्तर दिया—हम लोग शायद समय पर न पहुंच पाएं। इसलिए आप अब और इन्तजार न करें। कहकर उसने टेलीफोन का रिसीवर रख दिया। कमरे में कुछ देर तक निस्तब्धता छाई रही। बच्चे एक एक कर उछल-कूद कर रहे थे शोर मचा रहे थे— मम्मी जन्म दिन पार्टी में नहीं चलना।

रणधीर बच्चों के शोर से परेशान होकर चिल्ला उठा—चुप रहो, भाग जाओ यहां से, कोई नहीं जाएगा जन्म दिन पार्टी पर।

गुलाब की पखुड़ियों से कोमल बच्चों का मुंह सूख गया। उनकी कोमल भावनाएं पतझड़ के समान बिखर गई। सहमे सहमे बच्चे कमरे से बाहर निकल गए।

माधवी की ममता चकनाचूर हो गई। वह आधा दजन बच्चों को सम्भाले या अपने विद्रोही मन को। काश वह मां न बनती। बांझ ही रहती। मां का हृदय लेकर वह किस मुंह से पार्टी में जाए। किसी को क्या मालूम कि उसका मन कितना आ दोलित है। उसके पति दिनभर व्यापार में व्यस्त रहते हैं। रात को देर से लौटते है। बच्चे अपने पापा का मुंह देखने को भी तरस जाते हैं। उसके परिवार मे कितनी दीवारें खड़ी हो गई हैं काश वह इन दीवारों को तोड़ सकती। उसके जीवन मे कितना अंधेरा है। क्या वह केवल बच्चों को जन्म देने के लिये ही बनी थी वह अपने बचपन की यादों में खो गई कितना सुख था कितनी निश्चिन्तता थी। जब उसने यौवन

की दहलीज पर पैर रखा तो अपने को खिलते गुलाब की भाति महसूस किया। उसके रसीले यौवन के मकरन्द में चारों ओर अनगिनत ललचाये भवरे मडराते थे। रणधीर भी उनमें से एक था। विवाह से पूर्व उसने कितने सब्ज-बाग दिखलाये थे, तब उसने अपने प्रेम को धन की चादर से ढक लिया था और आज वही चादर एक पत्थर-सा बोझ बन गई है। उस असहनीय बोझ न उसकी आशाओ को कुचल डाला है। एक के बाद एक वह आधे दजन बच्चो की मा बन गई। उसे लगा जैसे उसका व्यक्तित्व कई टुकडो मे बट गया हो। आज वह जो कुछ है वह केवल शरीर का जजर ढाचा मात्र है, जिसे जब चाहे रणधीर तोडकर फेंक सकता है। वह आधुनिक जीवन के उतार-चढावो मे गोते खान लगी।

उसी समय उसकी पडोसिन न आवाज़ दी—'बहन सगीत शुरू हो गया है।' रणधीर लडखडाते कदमो से उठकर बाहर चला गया। बाहर शीतला का पति खडा इन्तज़ार कर रहा था। रणधीर को देखकर बोला अरे क्या बात है आप तो बडे उदास दिखाई देते है।

रणधीर ने शीतला के पति को बिठाकर शीशे की अलमारी से शराब की बोतल निकाल कर गिलास मे डालते हुए कहा—यह रही उदासी की दवा।

सुनील चौक पडा। ऐसी क्या बात है? क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हू।

नहीं सुनील कोई किसी की मदद नही करता है। हा तुमसे एक बात अवश्य जानना चाहूगा?

सुनील बोला—कहिए, मैं सब कुछ बतान को तैयार हू। क्या मुझसे कोई गलती हो गई है।

नही ऐसी कोई बात नही है, किन्तु मै जानना चाहूगा कि तुम्हारे सुखी जीवन का रहस्य क्या है? मेरे पास इस दुनिया की सारी न्यामते हैं मगर मन की शान्ति नही है।

शीतला का पति बोला—बस इतनी सी बात। मैं तो डर गया था। यह तो बडी मामूली-सी बात है। मेरा सीमित परिवार है। दो बच्चे और बीवी। बस। बचपन मे मैंन, जितनी चादर उतन पाव फैलाने वाली

कहावत को सोचा समझा और फिर अपने जीवन मे उतार लिया । न कोई मानसिक उलझन, न तनाव, न उदासी, न जलन । बच्चे ठीक पढ़ लिख रहे हैं—सब सुचारु रूप से चल रहा है, समय का मैं सदा सदउपयोग करता हू, और अवकाश के क्षण मे आमोद प्रमोद के लिय मित्रो के बीच बैठकर दो क्षण हस बोल लेता हू ।

रणधीर की समझ म सब कुछ आ गया । मगर वह जीवन के उस कगार पर खडा था जहा से पीछे लौटना असम्भव था । आज उसे अनायास ही सच्ची शान्ति की कुजी मिल गई । वह सोच रहा था कि अब वह आज स अपने अशान्त जीवन की आधारशिला पर नय समाज की नीव रखेगा । राह मे कीडे मकोडो जस नगे भूखे बच्चो के लिय क्रियात्मक ट्रेनिंग का स्कूल खोलेगा । वह अपने व्यापार म एक ऐसी शाखा खोलगा जो जन-जन तक सुनील का सन्दश पहुचा सके कि सीमित परिवार ही सफल तथा सुखी जीवन की कुन्जी है । जहा कोमल गुलाब सुगन्धित होते हैं । गुलाब स बच्चे मा बाप के मस्तिष्क तथा आर्थिक तनाव की अग्नि म नही झुलसत । उसकी निगाह वैस ही ड्राइग रूम की खुली खिडकी के बाहर अटक गई । जहा खुले बगीचे मे खडे पाधो पर अनगिन उनके गुलाब मुस्करा रहे थे ।

नायक

जब कभी अरविन्द मुझे मिलता मुस्कराता हुआ मिलता। उसका गेहुआ रंग ताम्रमिश्रित सान जसा सुगठित यूनानी मूर्ति सा सानुपाती शरीर—मुखमण्डल पर युवा अवस्था की बिखरी आभा—मादकता मे डूबी हिरन शावक-सी भोली चपलता लिये चमकीली आखे—गुलाबी पतले अधर कुछ ऐसे लगते थ जस किसी यथार्थवादी चित्रकार का चित्र हो। उसकी नुकीली पतली मूछ तीखी नासिका तथा उन्नत ललाट उसके राजपूती वंशज का प्रमाण थी। मैंने कभी उस हताश नही देखा किन्तु आज जब मैं उससे मिला तो मुझे लगा कि उसके मक्खन जैसे कोमल चेहरे पर कोई दद का परत उभर आई हो, उसकी नैन दरारो म किसी विवशता की दो बूदें छलछला रहा था। उसकी सलिल सरिता सी मुस्कान का प्रवाह कुछ अवरुद्ध सा लगा। शायद किसी गहन जीवन समस्या की कटीली झाडिया म उसका कोमल हृदय उलझ गया था।

शिमला की माल रोड पर इस समय घने बादलो के कुहासे मे मुझे लग रहा था कि जस धवल चांद को काले बादलों के टुकडे ने घेर लिया हो। उसका तेजस्वी चेहरा काला पडता जा रहा था। मैं सहसा कुछ भयभीत-सा हो गया। मुझे लग रहा था कि किसी गहन बोझिल पीडा की तीखी धारों ने उसके व्यक्तित्व को भेद डाला हो। उसकी चिर परिचित आत्मीयता ने मेरा मन भी घायल कर दिया। वह मेरे सम्मुख मूक देवदार के वृक्ष के समान अडिग खडा था। मेरा साहस न हुआ कि मैं उससे कुछ पूछू —अरविन्द तुम्हें आज हुआ क्या है। और म अपने मन म दबी आशका म स्वयं को टटोलने लगा।

मेरे मानस पटल पर उसके अतीत के चित्र एक एक कर साकार होने लगे।

मुझे याद आया कि मैंने उस आठ वष पूव पहलगाव म सबसे पहले देखा था। वहा वह भी अपन परिवार के साथ आया था। उस समय मुझे अपनी एक कहानी के लिए एक विशेष प्रकार के व्यक्तित्व वाले बालक पात्र की तलाश थी। तब मेरी पटकथा के आधार पर जुतिषी पण्डित अपन प्रसिद्ध नाटक की रचना किया करत थे। जिन्हे मच पर खेला जाता था। मरी कथा पर आधारित सभी नाटक बड सफल रहत थे। इसका एकमात्र कारण था कि मेरे सभी पात्र और कथानक यथाथ जीवन पर आधारित होते थे। मैं काफी खोजबीन के पश्चात चरित्रो का चुनाव अपनी कहानी क लिए करता था अरे! म यहा मूल कहानी क स्थान पर आपस नाटक की बात कर बैठा।

हा तो मैं कह रहा था कि अरविन्द पहल पहल मुझे पहलगाव म मिला था। तब मैं 'पथ प्रदशक' नाटक क लिए कथानक और पात्र ढूढ रहा था।

काश्मीर के पहलगाव के उस पहाडी कस्बे म कत्थई रग की फिरन पहने गुलाब से कोमल रग बिरगे काश्मीरी बच्चो क बीच अरविन्द बडे लापरवाह अन्दाज म खडा एक बडा सा सब खा रहा था। उस दहकानी पृष्ठभूमि में मुझे तब अरविन्द इन्डो ग्रीक सुन्दरता की सजीव मूर्ति-सा लगा। दूर तक फैली ऊची नीली सफेद बफ-सी ढकी पवत शृखला पर उगी गहरी वनस्पति के बीच वह मुझे एक आलौकिक नायक-सा लगा। मेरी पनी दष्टि म वह मेरी नइ कहानी का एक एसा नायक था जो जुतिषी जी के नाटक का सच्चा आदश नायक बन सकता था। कुछ शोख चचल सा तब उसके सिर पर लाल सफेद चैक क कपड की कैप लगी थी। जो प्रसिद्ध फिल्मी हीरो देवानन्द की शलो म कुछ आग की ओर माथ पर झुकी हुई थी। उसके खडे होन तथा बालने का अन्दाज बिलकुल निराला था। बस फिर क्या था मैंने अपन कन्धे पर झूलत कैमरे स उसका एक चित्र उतार लिया और फिर उसके माता पिता स मिलकर उसके लिए अपन नाटक में नायक के रूप म अभिनय करन की बात उनक सम्मुख रखी, किन्तु हुआ इसके

विपरीत। उन्होंने मेरे प्रस्ताव को छोटा जानकर ठुकरा दिया। अब आप स्वय ही साच सकते हैं कि मेरी कहानी तब अधूरी ही रह गई मैं अपना ग्रीष्मावकाश पहलगाव म बिताकर लौट आया ।

इस घटना को पाच वष बीत गय। और मैं शिमला म अपन व्यवसाय म व्यस्त हो गया। एक दिन अकस्मात् चिलचिलाती पहाडी धूप मे शिमला के स्कण्डल पाइट पर मेरा खोया नायक कुछ दूरी पर मेरे सम्मुख खडा था। मैं उसे पहचानन का प्रयास कर ही रहा था कि वह स्वय मेरे पास आकर बोला—शायद आपने मुझे पहचाना नही? मैं अरविन्द हू! मैं अवाक था। लग रहा था कि मैंने पहले भी कही उसे देखा है।

वह फिर तपाक स बोला अर! आपको याद नही आ रहा। आपने ही तो सेब खाते हुए पहलगाव म अपन कैमरे स मेरा चित्र लिया था। अब मैं सेट एडवड म यही पढता हू। क्या अब आप मुझे अपन नाटक मे काम दे सकते हैं। मुझे नाटक का नायक बनने का बडा शौक है। मैं सहसा ही बिना सोचे समझे कह बैठा हा! मैं अवश्य तुम्हे काम दूगा। और फिर उसके बाद वह निरन्तर मुझस मिलता रहा। एक दिन इसी बीच वह अपनी उच्च शिक्षा के लिए कहीं बाहर चला गया और मैं फिर अपन काम म व्यस्त हो गया।

कल शाम कई वर्षो बाद वह फिर मुझे घन बादलो के बीच माल रोड पर मिला। अब उसमे अपनी आयु की आवश्यकताए स्पष्ट उभर आई थी। कोई तलाश, कोई अधूरापन उसकी आखो म झलक रहा था। एक पल उसे देखकर मुझे लगा कि मेरी कहानी पर आधारित मेरे नाटक का ड्राप सीन हो गया है। अब वह मेरे नाटक का नायक नही रहा।

मुझे लगा कि जस एक आदश नायक किसी यथाथ स टकराकर चूर चूर हो गया हो। बिखरे काच का समाज मे कोई उपयोग नही रहता, कोई मूल्य नही होता। मुझे उनकी सी ठेस लगी, मैं उमस कुछ बोलू कि वह स्वय ही कुछ और समीप आकर बोला—सर! आपसे कुछ राय लेनी है। मैं कई दिनो से आपको शिमला म ढूढ रहा था। अब तो आपने अपना घर भी बदल दिया है। उसके इस लम्बे अनचाहे वाक्य ने मुझे झकझोर दिया।

मैंने कहा—कहो अरविन्द क्या कहना है ? क्या फिर मेरे द्वारा लिखित नाटकों में भाग लेना चाहते हो ?

नहीं सर ! अब मैं यथार्थ जीवन के रंगमंच पर खड़ा हूं । जहां सम्पूर्ण समाज खलनायक है । उसने कुछ रोष भरे शब्दों में तमतमाते हुए कहा ।

उसके रोषपूर्ण वाक्यों में उसके जीवन दर्शन के पुट में मुझे किसी अज्ञात आघात का आभास मिला । मैंने तुरन्त अपने को संयत करते हुए सन्तुलित स्वर में कहा—अरविन्द अब और पहेलियां मत बुझाओ स्पष्ट कहो ! तुम कहना क्या चाहते हो ?

वह बोला—सर ! मेरा जीवन दर्शन बड़ा कठोर सत्य है—बचपन में मैं आर्मी या नेवी अफसर बनने का स्वप्न देखता था । सोचता था कि देश की सेवा करूंगा । किन्तु मेरी नाव स्वयं भंवर में पड़ गई ।

मैंने फिर कहा—आखिर हुआ क्या है ? साफ साफ बताओ ना ।

अब वह चुप था । उसके मन की कोई गहरी व्यथा उसकी धंसी हुई आंखों में दो बूंद आंसू छोड़ गई । वह कुछ रुआंसा सा हो अवरुद्ध गले से बोला—कुछ नहीं सर कुछ नहीं !

मैंने ढाढस बंधाते हुए उससे कहा—कुछ तो बताओ—मैं जो कुछ तुम्हारे लिए कर सकता हूं करूंगा । यह वचन देता हूं । तुम आखिर इतने हताश क्यों हो गये ।

यह सुनकर उसकी निस्तेज आंखें फिर चमक उठीं । उसका भोला भाला बचपन मेरे सामने साकार हो उठा—काश्मीरी फिरन पहने बच्चों के बीच किन्तु अब अन्तर था समय का । पहाड़ी पृष्ठभूमि के स्थान पर अब चारों ओर यथार्थ जीवन का लम्बा संघर्ष उसके चारों ओर बिखरा पड़ा था ।

वह बोला—सर ! आप भी मुझे अब समझ नहीं पाएंगे क्योंकि आप सदैव एक आदर्श नायक को ही अपनी कहानी तथा नाटकों में स्थान देते रहे हैं । और बहुत तेज गति से वह यह वाक्य कहता हुआ घने कुहासे में लुप्त होता हुआ कहीं दूर चला गया ।

मैं उसकी धुंधली परछाईं को दूर तक जाते हुए अवाक्-सा खड़ा देखता रह गया ।

शान्ति

उस दिन वह एक स्वरा में मिला तो कुछ खोया-खोया-सा था। अक्सर मैं उससे अजीबोग़रीब प्रश्न कर बैठता हूँ। उस दिन भी मैंने उससे कहा "शादी क्या नहीं कर लेते सलीम! आख़िर इस तरह ज़िन्दगी ख़ानाबदोशों की तरह कब तक गुज़ारोगे?" कहने को तो मैं सलीम से कह गया—मगर मन ही मन ऐसा महसूस हुआ कि जैसे एक महान चित्रकार की कमज़ोरी को मैंने सरेआम नंगा कर दिया हो। नहीं नहीं उसकी कमज़ोरी का कहां बल्कि उसके अखण्ड व्यक्तित्व की एक बड़ी शक्ति को सरेआम अखाड़े में उतार दिया हो, जहां उसके जोड़ का कोई अन्य पहलवान न हो और वह स्वयं एक अजनबी पहलवान की भांति जीवन के मैदान में खड़ा हो।

यूं मेरे मन में अनेकों तर्क एक क्षण में ही ग्रामीण मेले में लगे हिंडोले की तरह झूल गये। मुझे लगा जैसे उस मन की असंख्य भीड़ मुझे ही घूर रही हो। अपने को ज़रा संयत कर मैंने सलीम की मुखाकृति को फिर बड़े गौर से देखा—उलझे हुए बड़े-बड़े काले बाल, निखरा हुआ कुन्दन-सा गौर-वर्ण चेहरे पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा जिसके अन्दर बड़ी-बड़ी दो आंखों की असीम गहराई में कल्पना के अनेकों रूप लहरा रहे थे। मुझे उस दिन उसका व्यक्तित्व रोज़ से अधिक आकर्षक लग रहा था। हमेशा की तरह आज भी मेरे शादी के प्रश्न पर उसने विरक्त भाव से कह डाला— "इतनी फ़ुरसत ही कहां है जो ज़िन्दगी के इस पहलू पर सोचूं। तुम तो जानते हो रंग और ब्रुश के अलावा मौक़ा ही नहीं मिलता। माना अगर शादी लूं तो" तो कहकर वह कुछ खो सा गया। ठण्डी चाय का ~

कर आंखों से चश्मा उतारते हुए वह कुछ अजीब सूने चेहरे पर बदलते रंगों मे बोला तो क्या मेरी यह कला, यह फन जिन्दा रह सकेगा—खानगी मसलों को सुलझाने में मैं उलझ जाऊंगा—तुम्हें तो मालूम ही है कि मैंने इस पेशे को अपने मजहब के खिलाफ एक जिहाद के रूप में अपनाया है। घरवालों व अजीज रिश्तेदारों की मर्जी के बिना मैं जिन्दगी की इस राह पर अकेला ही चल पड़ा। बीस साल गुजर गये घरवालों के लिए मैं मर चुका हूं। मगर जमाने के लिए मैं अभी जिन्दा हूं और जिन्दा रहना चाहता हूं जानते हो क्यों ?"

मैं क्यों का उत्तर भी न सोच पाया था कि वह फिर सिलसिलेवार शब्दों को जोड़ते हुए बोला— क्योंकि मैं दुनिया को इन्सानियत का मजहब देना चाहता हूं। रंग और ब्रुश से सिर्फ रोशन, अयां हुस्न की अक्कासी करना मेरी जिन्दगी का मकसद नहीं।"

'बस ऐसे ही तुम मेरी जिन्दगी या शादी जो चाहो समझ लो—यह मेरी जिन्दगी का अपना फलसफा है। अक्सर जो इसे समझना चाहता है वह और उलझ जाता है।'

उस दिन रस्तरां में सलीम के वाक्यों उसके फलसफे को समझने में मैं न जाने कब तक उलझा रहा। रेशम के खुशनुमा धागों की गुच्छी-सी वह उलझन मेरी उंगलियों की त्वचा द्वारा मेरी अन्तरात्मा में स्निग्धता के आभास का अम्बार लगाती रही।

पिछले दिसम्बर की छुट्टियों में वह अल्मोड़ा से दिल्ली किसी नौकरी के इन्टरव्यू के लिए बुलाया गया था। न जाने क्यों उसने मुझे नाहन से विचार विमर्श के लिए बुला लिया। जब मैं उसके पास पहुंचा तो वह अपने स्टूडियो में एक तैल चित्र बनाने में संलग्न था। वह स्टूडियो कोई खास पाश्चात्य उपकरणों से सुसज्जित या लैस नहीं था। घर के ही एक छोटे से कक्ष को उसने कला कक्ष बना रखा था। चारों ओर की दीवारें सीलन से एक दुर्गन्ध पैदा कर रही थीं। एक ओर लकड़ी के तख्त पर उसका बिस्तर लगा था। जिस पर ईरानी किन्तु बहुत पुराना पुश्तैनी कालीन बिछा था। —तकिये पर कई पोजों में किसी फोटोग्राफर द्वारा लिये गये चित्र पड़े थे। —नीचे फर्श पर पायदान और अनेकों रेखाचित्र बिखरे पड़े थे, लगता था

नायाब पेंटिंग है—जरा मैं भी तो उसे देखूं जिसके कारण तुमने इन सुंदरियों को भी ठुकरा दिया है।

'आओ इधर आओ मेरे करीब से इजल पर लगी हुई तस्वीर को देखो, इसे मैं चौदह नवम्बर तक पूरा कर देना चाहता हूं—' स्व० नेहरू की यादगार में 'बाल दिवस' पर इस पेंटिंग को विशेष रूप से मैं अपनी आर्ट की प्रदर्शनी में रखना चाहता हूं। देहरादून में जोगिन्दर ने सारा इन्तजाम कर लिया है—बस मेरे लिए यह पेंटिंग ले जाना बाकी है।"

'कहिये कैसे लगी?'

ओह इसमें तो तुमने कमाल ही कर दिया। मैं अपने उमड़ते हुए उद्गारों को और अधिक रोक न सका। रंग रूप के अद्वितीय चयन में उसकी जिन्दगी का फलसफा साकार था। चित्र मूक होते हुए भी यूनान के पत्थरों की भांति बोल रहा था। मेरी अनुभूतियां सिमटकर इस प्रकार जुबान पर आ गई कि शब्द जड़ हो गये थे सलीम ही मुझे उस चित्र पर अनेकों रूपों में दिखायी दे रहा था

भारतीय वेशभूषा में एक इन्सान दाहिना हाथ उठाये कुछ कह सा रहा था। पास में एक नारी एक बच्चे की लाश लिए खामोश मुद्रा में खड़ी थी। निराशा और दुःख उसके रोम-रोम से फूट पड़ रहा था। नीचे की ओर कुछ फौजी जवानों की लाशें क्षत विक्षत पड़ी थी। खून जैसा सुर्ख रंग पात्रों के घायल शरीर से बह रहा था।

मैं अधिक देर तक उसे न देख सका। सम्भवतः मेरा मन किसी अज्ञात भय से उद्वेलित हो उठा। यह चित्र सांकेतिक रूप में मानव समाज को कोई संदेश दे रहा था।

चित्र के रक्तिम वातावरण ने मेरे शरीर के तन्तुओं को गर्म कर दिया। एक अजीब-सी झनझनाहट मेरी नसों में दौड़ गई। अपने मन को बड़ी कठिनता से उस मानसिक स्थिति से निकालकर मैंने चित्र के सार को स्वयं कलाकार सलीम से पूछा। तो उसने बड़े दृढ़ स्वर में कहा—

हम शान्ति चाहते हैं यह इसका शीर्षक है।"

चौदह नवम्बर को प्रातः ही चौगान में एक नई गूंज सी भरने लगी। बैण्ड की धुन सुनकर ऐसा आभास होता था कि जैसे उसमें से ध्वनि आ रही

हो कि 'हम शान्ति चाहते हैं।"

मनुष्य की कितनी सीधी-सच्ची सरल चाह है। क्या सलीम बुद्ध है? अशोक है? गांधी है? या बर्टेंड रसल है ?

मगर नहीं यह सब वह कहां है? न वह वैरागी है न चक्रवर्ती राजा और न ही कोई राजनैतिक शांतिप्रिय शान्ति ज्योति जगाने वाला नेता ।

वह तो एक निर्धन, सदैव भौतिक समस्याओं से जूझने वाला एक असाधारण चित्रकार है। उसकी भौतिक कुंठाएं और सीमाएं उसके प्रखर व्यक्तित्व के प्रवाह को न रोक पाई ।

बहुत दिनों से सोचता हूं कि उसे एक पत्र लिखूं उसका हाल जानूं कि उसकी प्रदर्शनी और नौकरी का क्या रहा।

मैं सलीम के विषय में सोच रहा था कि डाकिया एक टेलीग्राम मेरे हाथ में दे गया, जिसमें लिखा था—

आर्टिस्ट डैड'

पढ़कर मुझे लगा कि जैसे चीन ने आज फिर अणु बम का विस्फोट किया हो।

भौतिक समस्याओं से सदा लड़ने वाले कलाकार को शान्ति मिल गई। मगर क्या मुझे कभी शान्ति मिलेगी? क्या नेहरू के मजहब की तरह सलीम के मजहब को कोई जान पायेगा।

चौदह नवम्बर सदा आयेगा और जोशों खरोश से जशन के रूप में मनाया जाता रहेगा। कौन बाल दिवस के लिए तसवीरें बनायगा। जिससे विनाश के बढ़ते पांव रुक सकें। लगता है शांति सदा के लिए सो गई हो।

भौतिक ख्याति और मान के अहम ने स्वयं को वियतनाम जैसी निदयता की जंजीरों में जकड़ लिया है।

मेरे सामने प्रायः सलीम जैसे अनेकों चेहरे उभर उभर आते हैं और शनैः शनैः इन्सानियत मरने लगती है, शांति चिरनिद्रा में सोने लगती है।

निरुपमा

'अरे दूर हट भिखारिन कहीं की' प्रसाद क्या तेरे लिए खरीदा है' एक मोटी ऊंचा बालों का जूड़ा बांधे सभ्य दिखने वाली महिला कह रही थी।

उसी समय आगे बढ़कर उस भिखारिन के फैले सीधे हाथ पर मैंने एक लाल वर्फी का टुकड़ा रख दिया। भिखारिन ने उसे लेते हुए अपने दूसरे हाथ से आंखों में आए छलकते आंसू पोंछ डाले। दबे स्वर में आशीर्वाद के कुछ शब्द उसकी जुबान पर अनायास ही आ गये। मैं काली बाड़ी मन्दिर की सीढ़ियां उतरने लगी। मेरे साथ मेरी छोटी पुत्री रीना प्रश्नवाचक निगाहों से मुझे देखते हुए कहने लगी— मम्मी यह भीख मांगने वाली औरत रो क्या रही थी ? मैं निरन्तर आगे बढ़ रही थी। मुझे शिमला के माल रोड पर कुछ सामान खरीदना था। दूकान पर सामान खरीदते हुए भी रीता के बाल सुलभ मन पर वही प्रश्न उभर आया और वह फिर पूछने लगी कि वह भिखारिन रो क्या रही थी ? क्या उसे किसी ने मारा है ? मैंने इस प्रश्न से अपना पीछा छुड़ाने के लिए झल्लाते हुए कह दिया—'हां उसे किसी ने मारा है।' किन्तु वह शान्त न हुई फिर दूसरा प्रश्न पूछ बैठी। यह पढ़ती क्यों नहीं ? इसी तरह बेतुके प्रश्नों का उत्तर देती मैं उसी राह से घर वापस लौटी। तब तक काली बाड़ी मन्दिर पर दर्शनार्थ आए भक्तों की भीड़ छंट चुकी थी। किन्तु ठिठुरती सुनसान रात्रि में वह भिखारिन ज्यों की त्यों खड़ी थी। मेरे द्वारा दिया हुआ लाल बर्फी का टुकड़ा उसकी हथेली पर पड़ा था। मैं एक पल वहां ठहर गई। बिजली के खम्भे से आती रोशनी में मैंने उसके चेहरे को गौर से देखा तो लगा कि जैसे अतीत का कोई दर्द उसके रूप मण्डल पर तैर रहा हो। वह किसी दिवा स्वप्न में मग्न खोई हुई मूर्ति

लग रही थी।

मेरे मुख से अनायास ही निकल गया—अरे तू अभी यही खडी है। अपने को सम्बोधित होते देख वह भिखारिन चौंक पडी, जैसे उसका कोई मधुर स्वप्न टूटकर बिखर गया हो। मैं फिर बोल उठी, अरे! तू कोई काम क्या नही करती, भीख से पेट भरना कोई अच्छी बात है ?

माई तू ठीक ही कहती है। किन्तु मुझ जसी भिखारिन को काम कौन देगा ? मेरा कोई भी नही है।

उसका कोई भी नही है यह जानकर मेरा मन द्रवित हो उठा। मुझे लगा जसे इस विशाल जीवन रूपी सागर म वह स्त्री एक अकली तिनका मात्र हो। जिस तूफानी लहरो पर तिरना ही है। मैंने फिर अपने प्रश्न को दोहराया। उसका वही उत्तर था—हा माई मेरा कोई भी नही है। उसके इस वाक्य ने मेरा मन झकझोर दिया। मुझे याद आया जब किसी कला प्रदशनी मे 'राह के भिखारी' नामक कला कृति सैकडो रुपये मूल्य की होते हुए भी बिक गई थी। किसी कला प्रेमी न उस खरीद लिया था किन्तु आज इस जीवित भिखारिन का कोई मूल्य नही, इसका जीवन अथहीन है। मैं उससे अगले दिन उसी स्थान पर मिलने का कहकर घर लौट आई।

दूसरे दिन मैं फिर काली बाडी मन्दिर क द्वार पर पहुची। देखा तो भिखारिन खडी थी। मुझे देखकर उसका मुख किसी आशा से टिमटिमा उठा। मैंन उसस उसका नाम पूछ लिया। वह बोली राह की भिखारिन। मैंन प्रतिरोध म कहा—इस नाम के अतिरिक्त बचपन का नाम क्या है ?

बचपन का शब्द सुनते ही उसका मन पीडा से भर गया बोली आप यह सब जानकर क्या करेंगी ?

मैंने कहा—कुछ करना ही है तभी तो पूछ रही हू। वह रुधे हुए गले स बोली— निरुपमा'। मेरे माता पिता यही कहा करते थ। किन्तु वह बचपन की निरपमा तो कब की मर चुकी है अब तो मैं अपना नाम भी भूल चुकी हू।

मुझे उसका नाम सुनकर लगा कि कभी वह किसी अच्छे परिवार से रही होगी। मैंने उससे अपना बीता जीवन बताने का आग्रह किया।

वह बोली—माई तू किस किस की आत्मकथा पूछेगी ? मुझ जसी

सहस्त्रो नारिया इस देश म हागी, जा अपनी लाश स्वय अपन कधा पर उठाए रेंग रही हैं।

यह वाक्य सुनकर मुझे लगा जैस उसके जीण स्वर म कही कोई दार्शनिक मम भेदी तत्व छुपा हो, जस काई उपयासकार अपनी कथा का विवरण सुनान से पूव अपने श्राताआ के मानसिक स्तर की टाह ल रहा हा। मेरी जिज्ञासा और भी प्रवल हो उठी—'मैंने अपन आग्रह को दोहराया और उसके समक्ष प्रण किया मैं उस जसी निरुपमाआ को दलदल से निकालने का पूरा प्रयास करूगी।" मैं स्वय एक नारी हू। तुम्हारा दुख समझ सकती हू।

इस ढाटस पर वह अपन मन का वग रोक न सकी और अपन अतीत को कुरेदत हुए बोली—वचपन मे मेरा नाम निरुपमा था। युवावस्था म लाग मुझ नीरु कहन लगे। एक दिन मैं पूर्णिमा की चान्दनी म आगर का ताजमहल दखन गई। वहा मुझे एक शाहजहा मिल गया, जिसन मुझ मुमताज की सना दन की चाह व्यक्त की। तब मैं जीवन के यथाथ म अनभिज्ञ थी। मैं समय क बहाव म बहन लगी। मुझ समाज की आलोचनाओ का गरल पीना पडा। मेरा उस युवक स विवाह हो गया। विवाह क पश्चात पहाडो की सर करन शिमला आ गई। इस मन्दिर म वडी कामनाए सजाए मैंन लाल वर्फी का प्रसाद चढाया था न जान क्या क्या मागा था? मैंन भी तब एक भिखारिन से कहा था— अरे दूर हट प्रसाद क्या तर लिए खरीदा है?

मैं निस्तब्ध उसकी आत्मकथा सुन रही थी। उसकी स्मृति धारा क वेग को बिना ताडे हुए मैंन कवल इतना ही कहा—फिर क्या हुआ?

फिर क्या हुआ—माइ दूसरी सुबह मरा वह ववफा शाहजहा जिस होटल म मैं ठहरी थी मुझे सोता छाडकर कहा दूर चला गया। और मरी झाली म दर दर की ठोकरें डाल गया। अपनी आत्मा का बचान म शरीर बिकता रहा। और अब अस्थिपजर लिय निर्जीव-सी मैं आपक सामन खडी हू। वापस घर लौट जाना सम्भव नही था क्योकि हमारी शादी दोना क घर वाला की सहमति क बिना हुइ था। मर्दों की दुनिया म नारी शायद एक नफरत की गठरी है।

दुःख इस बात का है कि मैं जिस घर भी नौकरी की खोज म गई वहा मुझे औरतो से ही गालिया खानी पडी। अत्याचार व क्रूर व्यवहार के अलावा मुझे कुछ नही मिला। समाज सेवी सस्थाओ मे भी दुव्यवहार का व्यापार देखा। मन्दिरा म पाप के घण्ट बजाते हुए भी थक-सी गई हू। कोई भी जीवन की राह साफ सुथरी नज़र नही आती।

कल वर्षो बाद इस लाल वर्फी के टुकडे मे अपना प्रतिबिम्ब स्वच्छ दिखाई पडा और तब से इसे निहार रही हू। सोच रही हू कि सम्भवत अपने को जीवित रखने का कोई अवसर मिले। आपके वाक्य कानो मे गूज रहे थे। आखा को आपका ही इन्तजार था।

क्या आप मुझे कोई नौकरी दे सकेंगी ?

मैं सहसा चौंक गई। मैंने उसे निराश न करने के उद्देश्य से कहा—यू ता मैं अपना काम स्वय ही कर लेती हू। छोटी-सी गृहस्थी है किन्तु फिर भी मैं तुम्हे अपने घर रख लूगी। अब निराशा की कोई बात नही है बहन! तुम मेरी कहानी का एक जीता जागता चरित्र हो।

□□